राजस्थली

लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

सम्पादक
श्याम महर्षि

प्रबन्ध सम्पादक
रवि पुरोहित

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

अक्टूबर-दिसंबर, 2020

बरस : 44 अंक : 1 पूर्णांक : 149

संपादक
श्याम महर्षि

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

प्रकाशक
मरुभूमि शोध संस्थान
राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803
www.rbhpsdungargarh.com

e-mail : rajasthalee@gmail.com
ravipurohit4u@gmail.com

आवरण
आरती शर्मा
बीकानेर

रेखाचित्राम
रोहित प्रसाद पथिक
आसनसोल (पं. बंगाल) 8167879455

ग्राहक शुल्क

पांच साल : 500 रिपिया, आजीवण : 1500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

संपादकीय

कुण जमीन रो धणी! — *श्याम महर्षि* — 3

कहाणी

हेताळू निजर — *सावित्री चौधरी* — 4

मौसर — *अरुणा अभय शर्मा* — 9

लघुकथा

प्रण / घणी चतर — *उर्मिला माणक गौड़* — 12

बो ईज हुयग्यो / समाज सेवा — *राजेश अरोड़ा* — 14

सबद-चितराम

कळह आळो घर — *निशान्त* — 16

चितार

म्हारो लाडेसर — *अनिला राखेचा* — 18

कविता

रेत : चार चितराम — *डॉ. रमेश 'मयंक'* — 21

जीव-जूण / बदळाव — *राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर'* — 23

रावण री पीड़ / मीठो सुवाद / दरपण — *डॉ. गौरीशंकर प्रजापत* — 25

प्रेम री कूंची — *मीनाक्षी पारीक* — 27

सियाळो / गैली राधा — *तरनीजा मोहन राठौड़ 'तंवराणी'* — 29

गीत

मनड़ो म्हारो हरख रियो है / सुण-सुण थांनै बिरहण रोवै

सैनां-सैनां में ही बात तो — *मदनलाल गुर्जर 'सरल'* — 31

नवसिरजण

भोरा / चार चौका — *जयप्रकाश अग्रवाल (चैनवाला)* — 33

शौर्य गाथा

हैफा हीरो मेजर दलपतसिंह शेखावत — *दीपसिंह भाटी* — 35

मीठी मसकरी

राज चढो तो राखजो / दीनानाथ दयाह

मत दीजो को धीवड़ी / गुर बैठा जीमै गधा — *गिरधरदान रतनू दासोड़ी* — 39

जात्रा-संस्मरण

धरती रै सुरग री झलमल करती झील — *डॉ. रेणुका व्यास 'नीलम'* — 43

कूंत

अपणायत अर भेळप रा भळहळता भाव : अंतस री आवाज — *डॉ. तेजसिंह जोधा* — 48

'पळकती प्रीत' रा पळकां रो मनमोवणो महाकाव्य — *डॉ. मदन सैनी* — 52

अंतस रै भावां री सरस अभिव्यक्ति : सरद पुन्यूं को चांद — *डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'* — 54

कुण जमीन रो धणी!

राजस्थानी रा महाकवि कन्हैयालाल जी सेठिया री कविता 'औ जमीन रो धणी क बो जमीन रो धणी! कुण जमीन रो धणी?' अबार री घड़ी नूंवा कृषि कानूनां रै सरकारी फरमान अर उणरै खिलाफ चालतै किसान आंदोलन सारू सटीक बैठै।

केन्द्र सरकार कानी सूं किसानां सारू तीन नूंवा कृषि कानूनां री घोसणा करतां ई आखै भारत रा घणकराक किसान संगठन भेळा होय'र आं सरकारी कानूनां नैं पाछा लेवण सारू लामबंद हुयग्या। दिल्ली री सड़कां माथै भारत भर सूं आयोड़ा किसान धरणो देय'र बैठग्या, जिण मांय हरियाणा अर पंजाब रा किसान सै सूं बेसी निजर आवै। अै दोनूं ई प्रदेस भारत रै खाद्यान्न उत्पादन रै मामलै में सिरै है। आं दोनूं ई प्रदेसां री सरकारां भी न्यारी-न्यारी है। पंजाब में कांग्रेस अर हरियाणा में भाजपा। इण वास्तै औ कैवणो कै दिल्ली री सड़कां माथै धरणो देवणिया किसान किणी अेक पारटी विसेस रा है, सिरै सूं गलत है।

किसान अन्नदाता है, पण लारला कीं बरसां सूं किसान अन्नदाता नीं होय'र कर्जदार हुयग्यो है। केई किसान आतमहत्या कर चुक्या है। बांनै बांरी फसल रा ना तो पूरा दाम मिलै अर ना फसल खराब हुयां वाजिब मुआवजो। तिण ऊपर उण माथै अैड़ा कानून थोपीजै जिणसूं कै उणनैं आपरी फसल रो न्यूनतम समर्थन मूल्य ई नीं मिलै तो उणरो आंदोलित हुवणो सुभाविक है। 'मरता क्या नहीं करता' री तरज माथै उणनैं मजबूर हुय'र खेतां री माठ छोड'र राजधानी री सड़कां माथै आवणो पड़्यो है। जका नूंवा कानून पारित करीज्या है, उणरै अनुसार किसान चावै तो आपरी खेती कार्पोरेट कंपनियां नैं ठेकै माथै देय सकै। बो जचै जठै आपरो माल बेच सकै। अै कानून दीखण में जेवड़ी जियां जित्ता सीधा-सरल लागै, वैवारिक तौर सूं बित्ती ई इण मांय घुळगांठां है। अेक खेतीखड़ आदमी आपरै खेत कनै री मंडी छोडनै आपरो माल बेचण नै कठै तांई जाय सकै? कांई आढतिया उणनैं माल लेय'र बारै जावण देवैला। दूजी बात, जे कंपनियां किसानां री जमीन ठेकै माथै लेय'र खेती करैला तो बांरी आपरी सरतां अर नेम-कायदा होसी, जिणां नैं करसै नैं मानणा ई पड़सी। कंपनी नैं दो पईसां री आमदनी हुयां ई बा किसान नैं कीं देवैला! कूवै में हुसी जणै ई तो खेळी में आसी। पछै खेत अर खेती रो धणी कुण होसी, कंपनी आळा पूंजीपत कै किसान? सरकार तो किसान री फसल रो न्यूतम समर्थन मूल्य देवण में ई आना-कानी करै तो पछै कंपनियां किसानां रो भलो क्यूं करसी? इण वास्तै सरकार नैं कोई भी नूंवो कानून लावण सूं पैली किसानां कै वांरा प्रतिनिधियां नैं विश्वास में लेवणो चाईजै।

—श्याम महर्षि

सावित्री चौधरी

हेताळू निजर

जद सूं म्हनैं समझ आई, म्हारै मां-बापू नैं अेक-अेक पईसै खातर कळेस करतां देख्या। जिण कच्ची बस्ती में म्हारी छोटी-सी झूंपड़ी ही, बठै लवै-तवै सगळी जगां इसो ई माहौल हो। च्यारूं कानी कूटळै रा ढेर, कोजी बांस, सील, माखी-माछरां रा ठठ हा। कठैई तो कुत्ता कचरै रै ढेर में कीं हेरता थका जोर-जोर सूं भुंसता या लड़ता तो कठैई मैला, चीथड़ा-सा गाभा पैर्‌यां टाबरिया कुदड़का मारता, हाको मचावाता अठी-बठी हांडता फिरता।

आथण रो निजारो तो और ई माड़ो होवतो जद मरद दारू पीय'र आवता अर जोड़ायत नैं, टाबरियां नैं कूटता-पीटता, गाळ्यां काढता। लुगायां ई जोर-जोर सूं चिरळावती अर छेकड़ बांरो रोवणो तद माहौल नैं अेकदम अणमणो कर देंवतो। मां म्हनैं रोजीना कैंवती, ''किसना बेटा, थूं थारै बापू जियां कामचोर, दारूखोर ना बणी। खूब मैणत करी अर पढाई कर'र आछो अर बडो मिनख बणी।''

पण म्हारो मन तो पढण मांय लागै ई नीं हो। मुस्किल सूं सातवीं तांई पढ्यो अर पछै छोटा-मोटा काम करण लागग्यो। स्कूटर, मोटरसाइकल, कार आद री मरम्मत करण आळै मिस्त्री कनै पिंचर लगावण अर धोवा-पूंछी रो काम मिलग्यो। बठै म्हारो भायलापो रफीक सूं हुयग्यो, जिको म्हारै सूं पांचेक साल बडो हो। बो चंट-चालाक हो।

मरम्मत रो काम करती बगत रफीक म्हनैं इन्नै-बिन्नै री बातां सुणावतो। अेक दिन उण कैयो, ''आपां सारै दिन अठै काम में रुंध्या रैवां हां, तो भी मालिक कितरो दकालै है अर पईसा ई

ठिकाणो :
29, सिंधी कॉलोनी
आदर्श नगर, जयपुर
मो. 9414377767

ISSN : 2320-0995

कितरा कम मजूरी पेटै आपां नैं देवै है। घर में भी कोई हेत-हियाव नीं करै, क्यूंकै इण सगळी बातां में जिकी राड़ री जड़ है बा है पईसो। जे आपां कनै पईसा होवता तो आपां ई खूब ठाठ सूं रैवता, फूटरी ड्रेस पैरता, आछै स्कूल मांय पढता, आछो खावता, मोटै बंगलै मांय रैवता, महंगी कारां मांय घूमता, जियां आपणी उमर रा पईसाआळा टाबरिया रैवै है— ठाठ-बाट सूं।''

कीं ताळ थम'र रफीक ओज्यूं कैवण लाग्यो, ''ईं उमर में ई कठै तो आपां कमावण वास्तै नीसर्‌या हां अर बडै घरां रा टाबरिया तो अबार तांई लाडकोड री छत्तर-छियां मांय इतराया डोलै है, खूब खेलै-कूदै है।''

रफीक नितका ई अैड़ी बातां रा सब्जबाग दिखावतो अर म्हैं बां सुपनां मांय गम जावतो। म्हैं कैवतो कै ठीक है, आपां धाप'र मैणत करनै पईसा कमासां, तो रफीक म्हारो मजाक उडावतो थको कैवतो, ''भायला, म्हनैं तो गधै री तरियां खपतां, बोझा ढोवतां जमारो बितावणो आछो नीं लागै। सगळै दिन हाडतोड़ मैणत करां अर पछै ई खावण नै लूखी-सूखी रोटड़ी, बै ई माथै मार्‌योड़ी।''

म्हैं भोळापण सूं पूछतो कै पछै आपां कियां पईसाआळा बण सकां हां। उण बतायो कै अेक तरीको है म्हारै कनै। जे थूं साथ देवै तो आपां दोनूं मिल'र छोटी-मोटी चोरी करसां, जिणसूं आपां रो गुजारो आराम सूं हो जासी। पण म्हैं डरग्यो अर कैयो, ''भायला, औ काम तो कतई आछो कोनी। म्हनैं तो डर लागै। पुलिस रै हत्थै चढग्या तो जेळ में ई जिंदगाणी काटणी पड़सी।

रफीक जोर सूं हांस्यो अर पछै हळवां-सी बतायो, ''भायला, थूं हाल टाबर है। म्हैं तो अेक-दो दफै इयांकली कारस्तानी कर भी चुक्यो हूं अर देखलै, आज तांई तो कदैई पकड़ीज्यो कोनी। अरे, सोच-समझ'र चालाकी, हुंसियारी अर धांसू तरकीब सूं भेळो काम करसां। पछै देख, किणरै बाप री हिम्मत है जिको आपां नैं दबाय सकै।''

म्हे अेक जग्यां ऊभा अै बातां करै ई हा कै अेक बूढळी नैं मिंदर सूं निसरतां देखी। रफीक कैयो, ''लै, थनैं म्हैं हाथूंहाथ दिखाऊं म्हारी हुंसियारी अर हिम्मत रो नजारो।''

बो उण बूढळी रै लारै चाल पड़्यो अर सून्याड़ आळी गळी में मुड़तां ई वो उणनैं धक्को देय'र हेठै पटक दी अर उठाण रै भानै सूं तुरत ई बीं रै गळै सूं सोनै री चेन झपट ली। बूढळी चिरळावती ई रैयगी। रफीक तो बठै सूं तीर ज्यूं भाज छूट्यो अर म्हनैं कैयो कै किसना! भाज अठै सूं। म्हैं भी उणरै लारै तैतीसा मनाया। भोत आंतरै गयां पछै म्हे थम्या अर हांपण लागग्या। रफीक सोनै री चेन नैं हवा में लैरावतो बोल्यो, ''इणनैं बेच्यां सूं आपां नैं पचासेक हजार रुपिया मिल जासी।''

''पण बेचस्यां किणनैं?'' म्हैं उंतावळी में पूछ्यो।

''थूं बेफिकर रैव। म्हैं इण रा टक्का बट लेसूं।'' रफीक कैयो।

दो-तीन दिनां पछै जद बो मिस्त्री रै वर्कशॉप माथै आयो तो म्हनैं इसारै सूं अेक कानी बुलायो अर दस हजार रुपिया री गड्डी म्हारै हाथ में झिलावतां कैयो, ''लै भायला, थूं भी करलै मौज-मस्ती।''

म्हैं तो डर सूं धूजण लागग्यो। इतरा रुपिया तो म्हैं म्हारै जमारै में कदैई नीं देख्या हा, सो म्हैं भी फंसग्यो लालच में।

म्हे दोनूं नौकरी छोड दी। महंगी ड्रेसां खरीदी। बण-ठण'र आछै होटल में जीम्या अर बडै-बडै बाग-बगीचां मांय टेम बितावण लाग्या। रफीक म्हनैं चोरी करण री कळा में चतर बणावण लाग्यो। उणरी हेराफेरी, चालाकी, हुंसियारी अर ठाडाई देख-देख'र म्हैं तो चकरा जावै हो। उण केई बडेरी लुगायां रा बैग अर चेनां झपटी। बो हमेस बूढळा मिनखां नैं ई आपरो सिकार बणावतो जिणसूं बै विरोध नीं कर सकै, लारै भाज नीं सकै।

अेक दिन अेक बडै बंगलै री रैकी करण सूं उणनैं ठाह लाग्यो कै बंगलै आळा मिनख छुट्टियां मनावण सारू कीं दिनां खातर कठैई बारै घूमण जाय रैया है। सांतरो मौको समझ'र रफीक म्हनैं कैयो, ''थूं आज रात नै त्यार रैयी। आज थारी पैली पारखा है, भोत ई हुंसियारी अर फुरती सूं माल समेटणो पड़सी। बंगलै रै पिछोकड़ै में बण्यै कमरियै में अेक छोरो रैवै।''

म्हे रात नै ढाई-तीन बज्यां-सी उण बंगलै में बड़ण री आफळ करण लाग्या। बाथरूम री बारी खुली ही, सो रफीक कैयो कै इण बारी मांय सूं मांयनै बड़जा होळै-सी।

म्हैं पंदरै-सोळैक साल रो मरियल किरकांट-सो छोरो हो। इण वास्तै म्हैं बारी में जियां-तियां कर मांयनै बड़ग्यो। पण मांयनै अंधारो हो अर म्हनैं कीं सूझै ई नीं हो। म्हैं मोबाईल री लाइट जगाई अर बींद पगलिया भरतो आगीनै जाय रैयो हो कै सारलै कमरै सूं किणी रै हांपणै अर कुरळाणै री आवाज सुणीजी। म्हैं बेगो-सो जाय'र दरूजै रै लारै लुक'र ऊभो हुयग्यो। म्हैं देख्यो, अेक साठ-सित्तर साल री बूढळी आपरै दोनूं हाथां सूं छाती नैं दाबती कुरळावै ही। बा पसेवै सूं हळाबोळ हुयोड़ी ही अर जोर-जोर सूं हांफै ही।

उणरी आ माड़ी गत देख'र म्हैं तो अेकदम दहलग्यो अर भाज'र बारलो गेट खोल्यो। रफीक नैं मांयनै आवण रो इसारो करयो। वो भी बोलबालो बूढळी कानी देखतो रैयो। म्हारी समझ में नीं आय रैयो हो कै अबै कांई करां? उणीज बगत रफीक दकालतो थको बीं बूढळी सूं आलमारी री चाबी मांगी अर चाबी नीं दियां जान सूं मारण री धमकी ई देय दी।

बा बूढळी वेदना भरी निजरां सूं म्हारै साम्हीं देख्यो। बीं रा आंसू गालां माथै बैवण लागग्या। उण हाथ जोड़'र कांपतै, धूजतै सुर मांय कैयो, ''टाबरियां, थे जो भी कोई हो, इण टेम अेक अैसान म्हारै माथै कर दो, सांवरो थांरो भलो करसी। म्हनैं नेड़लै अस्पताळ मांय पूगाय देवो, स्यात म्हारै दिल रो दौरो पड़्यो है। दरद सूं म्हारा प्राण तड़फड़ा रैया है।'' इत्तो कैय'र बा तो बुरी तरै सूं हांफण लागगी। लांबा-लांबा सांस लेवण लागगी।

 ISSN : 2320-0995

म्हारी निजर रफीक सूं मिली। म्हैं भोत ई लाचारी सूं बीं कानी देख्यो अर होळै-सी कैयो, ''भायला, बूढळी री बात मान लै। अेक भलो काम कर देवां आज तो आपां!''

बो म्हारै कानी आंख्यां सूं घोरका करतो कैयो, ''आपणै इण धंधै मांय दया-ममता री कोई ठौड़ नीं है। इयां जे दया दिखावता रैया तो पछै जिंदगाणी मांय कीं नीं कर सकां।''

पण, बीं बूढळी री छिटपिटाट म्हारै सूं देखी नीं जाय रैयी ही। म्हैं रफीक रा पग पकड़ लिया अर कैयो, ''म्हैं हमेसा बो ई काम करूं हूं जिको थूं कैवै है, सो आज तो अेक बात म्हारी ई मान लै भायला! चोरी करण रा मौका तो और केई मिल जासी, आज अेक नेक काम ई कर लेवणो चाईजै।'' म्हैं उणनैं म्हारी सौगन दिराई, भायलापै रो वास्तो दियो।

छेकड़ बो मानग्यो। म्हे बेगा-सी कार री चाबी हेरी। टीवी कनै लाधगी। बूढळी नैं गोद्यां में चक'र रफीक कार कानी चाल्यो। बीं नैं कार चलावणी आवै ही। कार में सुवाण दी बूढळी नैं अर बेगी-सी नेड़लै अस्पताळ में लेयग्या। डाक्टर बूढळी नैं जाणै हो। उण तावळी-सी बीं रो इलाज सरू कर दियो अर चाणचक पूछ्यो, ''थे दोनूं कुण हो?''

''म्हे इणां रा रिस्तेदार हां—दूर रा। गांव सूं आज ई अठै आया हा।'' अस्पताळ में भरती करावण सूं लेय'र दवायां आद रा सगळा पईसा ई म्हे म्हांरी जेब सूं दिया हा। अबै म्हे बूढळी नैं माजी कैवण लागग्या हा, क्यूंकै उणरी सेवा-टैल करतां-करतां अपणायत सी मैसूस होवण लागी ही।

जद माजी रा बेटा-बहू अर पोतो कमरै में बड़्या तो म्हारा होस उडग्या कै अब कांई बतासां कै म्हे कुण हां? म्हे दोनूं बठै सूं टरकणै री आफळ करी तद ई माजी म्हांनै रोक्या अर आपरै बेटै कैलास सूं मिलाया। माजी म्हारी खूब तारीफ करी कै जे आज म्हैं जीवूं हूं तो आं टाबरियां री वजै सूं। आंरो भोत बडो अैसान है, आपां सगळां माथै।

उणां रो बेटो हरख सूं म्हां दोनूं री पीठ थपथपाई अर जिण सवाल सूं म्हे डरपै हा, बो ई सवाल पूछ लियो, ''क्यूं भई टाबरो! थे दोनूं कुण हो अर इत्ती रात ढळ्यां म्हारै बंगलै मांय क्यूं बड़्या हा?''

'सांच नैं आंच कोनी', म्हारी मां री कैयोड़ी आ बात म्हनैं याद आवतां ई म्हैं तो हिम्मत कर'र ईमानदारी सूं साचली बात बता दी कै म्हे तो चोरी करण री नीत सूं थांरै बंगलै में बड़्या हा, पण माजी री माड़ी दसा देख'र म्हांरो मन पसीजग्यो अर म्हे इणां नैं अस्पताळ लेय आया। अबै आप चावो तो म्हांनै पुलिस रै हवालै कर सको हो।

कैलासजी कैयो, ''म्हनैं इचरज होय रैयो है कै थे इत्ती-सी उमर में ई चोरी करणी कियां सीखग्या? पण थे दोनूं छोरा भला लागो हो, इण वास्तै म्हैं थांनै माफ करूं हूं अर थे म्हारी मां री जान बचा'र म्हारै माथै भोत बडो अैसान कर्‌यो है, पण जेळ में तो थांनै रैवणो ई पड़सी, कठैई और नीं जाय सको।''

म्हे दोनूं डरपता-सहमता कैलासजी कानी देख्यो तो बै हंस पड़्या अर कैवण लाग्या, ''म्हारो मतलब है कै आज सूं थे दोनूं चोरी, हेराफेरी छोड'र सराफत री जिंदगाणी जींवता म्हारै कनै रैवो।'' पछै पूछ्यो, ''बियां थे दोनूं इण चोरी-चकारी रै टाळ के काम कर सको हो?''

म्हैं कैयो, ''म्हैं तो घर री साफ-सफाई, बरतण-भांडा मांजण रो काम कर लेसूं। रफीक नैं कार चलावणी आवै है, औ थांरी कार चलाय सकै।''

रफीक हेंप सूं म्हारै कानी देख्यो अर म्हनैं अेक कानी ले जाय'र पूछ्यो कै म्हारी जिंदगाणी रो फैसलो करणियो थूं कुण हुवै? म्हैं हेत सूं बीं नैं समझायो कै भायला! चोरी-चकारी, बेईमानी में कितरी जोखिम है? काळजो हरदम फड़कै चढ्योड़ो रैवै। ईमानदारी अर भलमानसी सूं कमा'र भी तो आपां आछै ढंगढाळै अर सुख सूं रैय सकां हां! जिंदगाणी आपां नैं सुधरणै रो अेक चांस देय रैयी है भायला! इसो सुनैरी मौको हरेक नैं नीं मिलै।

रफीक गैरै सोच में डूबग्यो अर छेकड़ मानग्यो। उण सोच्यो, जे काम ठीक लागसी तो रैय जासूं नीं तो पछै अठै सूं टुर जासूं।

कैलासजी, म्हांनै अेक कमरो देय दियो अर म्हे बठै रैवण लागग्या। म्हे आपरै घरआळां नैं ई खबर कर दी।

माजी जद आपरै पोतै विक्रम नैं आछी शिक्षाप्रद कहाणियां सुणावती बगीचै में बैठ'र तो म्हे दोनूं भी कनै बैठ'र सुणता। माजी म्हांनै भोत ई चावै ही अर हेत-हियाव सूं म्हारै सिर माथै लाड सूं हाथ फेरती तो म्हैं रफीक नैं कैवतो कै काश! म्हांनै भी बाळपणै में चोखा संस्कार देंवता माईत तो आपणी सोच भी खूब सांतरी होवती।

विक्रम रा पापा कैलासजी अेकर ओज्यूं मजाक में कैवण लाग्या कै सुबै रो भूल्यो जे आथण घरां आय जावै तो बतावो बीं नैं कांई कैवै?

म्हैं मन में सोच रैयो हो कै बीं नैं भुलक्कड़ कैवता होसी। तद ई विक्रम ताळी बजा'र हंसतो थको बोल्यो कै बीं नैं किसना भाई अर रफीक भाई कैवै। बै सगळा हंस रैया हा अर म्हे भी लजखाणा पड़ता मुळक रैया हा।

अेकांत में अेक दिन जद म्हे दोपारां रो खाणो खाय रैया हा तो रफीक गासियो मूंडै में घालतो कैयो, ''किसना भायला, थूं ठीक ई कैयो हो कै ईमानदारी री रोटी भोत सुवाद लागै, इणमें कितरो सुख-संतोस मिलै।''

❖❖

 ISSN : 2320-0995

अरुणा अभय शर्मा

मौसर

टन-टन-टन-टन-टन-टन-टन...! स्कूल री घंटी बाजतां ई टाबरां री रेस सरू हुय जावै अर इणमें सै सूं आगै रैवै देवी। हां सा—देवी। सातवीं कक्षा में भणण आळी देवी स्कूल रा हैडमास्टरजी अर सगळा टीचरां री लाडली है। हुवै ई क्यूं नीं, बालवाड़ी मांय भरती कराई जद सूं लेय'र आज सातवीं कक्षा तांई वा पैली ठौड़ आवती रैयी है। भणणो हुवै या खो-खो रो खेल या पछै पंदरै अगस्त कै छब्बीस जनवरी रा कार्यक्रम, सबं में उणनैं आगै ई रैवणो है। बडा-बडा सुपना आंख्यां मांय भरयोड़ा है इण दादोसा री लाडकी बाईसा रै।

देवी रा दादोसा आपरै टेम रा सै सूं भणिया-गुणिया मिनख है। ना बैन, ना ई बेटी हुयी। घणी खमा-खमा करी वै माजीसा री जद जाय'र चौथोड़ै बेटै रै जलमी ही देवी। पूरो गांव जिमायो हो नरसिंघदासजी। अर लाडेसर रो नांव ई राख दियो—देवी। देवी मां री किरपा सूं ई आयी ही घर में 'देवी'। नरसिंघजी बडेरां री हरेक रीत निभावता। घर में कुळदेवी-देवतावां रा रातिजोगा दिरीजता। नौरतां में तो घरआळा सगळा ई वरत राखता आया है। पण अेक ई बात ही जकी वांनै नीं सुहावती। वा ही छोरियां नैं घणी रोका-टोकी करणी अर वां सागै दुभांत राखणी। गांव भर नैं समझावता रैया वै कै अै कन्यावां है, चिड़कल्यां है, काल उड जासी। जीवण दो आंनै। इणां सूं ई औ संसार भरियो-तरियो लागै, नींतर तो साव सूनी है आ दुनिया।

आज वांरी लाडेसर हर दिन जियां ई कुदड़का मारती, हिरणी ज्यूं कुळाचां भरती सहेल्यां सागै स्कूल सूं घरै आयरी है,

ठिकाणो :
द्वारा अभयशंकर शर्मा
विनायक विहार,
प्लाट नं. 67, के. नं. 147
रिलायंस पेट्रोल पंप रै लारै
देवासियां री ढाणी
पाल गांव, जोधपुर
मो. 8875015952

पण औ कांई! गळी में पग धरतां ई वा चमकगी। पूरो गांव आज इण गळी में भेळो हुयग्यो। घर रै बारै औ नाई क्यूं बैठो है?

बिचारती, बड़बड़ करती देवी घर तांई पूगी। इत्तै में बडी मां घूंघटै में बारै आयी रोवती-रोवती अर देवी रो बस्तो अर जूता लेय'र ओरियै साम्हीं लांबा-लांबा डग भरती गई। हाथ रो सामान मांयनै नांख'र पाछी लुगायां कनै जाय'र बैठगी। देवी समझ नीं सकी कै औ कांई होय रैयो है। इत्तै में बडा बाबोसा आय'र उणनैं खोळै में ऊंचाई अर बीच आंगणै में लेय आया। बोल्या, ''बेटा, थांरा दादोसा थांनै छोड'र गया परा।''

सुण'र आंख्यां फाट्योड़ी ई रैयगी देवी री। रोय-रोय'र आधी होयगी ही वा। छोटोड़ा बाबोसा उणनैं बतायो कै दादोसा अंत समै मांय थनैं ईज याद करता थकां आंख्यां मींची ही। आ बात चेतै कर-कर'र देवी और अणमणी अर उदास व्है जावती।

तीन दिन बीतग्या। दादोसा री काकै री बेटी अर उणरी बेटियां ई इण घर री सुवासण्यां ही, तो बडा बाबोसा, वांरी अेक बेटी अर जंवाई नैं देवी रा बाबोसा साथै गंगाजी मेल दिया।

दिन तो ऊगतो, बिसूंजतो, पण देवी दादोसा लारै इसो हिंयो लियो कै बीमार पड़गी। आज पंडतजी आयोड़ा है। ''औ कांई! मौसर! औ मौसर कांई होवै? म्हारो ब्यांव!''

देवी रा छोटा-सा जीवड़ा माथै तो जाणै मगरा रा मोटा-मोटा भाटा ई पड़ग्या हा। वा रोई, पग पटक्या, पण टाबर री कुण सुणै?

देवी जद नीं मानी अर आपरी जिद माथै अड़्योड़ी रैयी तो बडा बाबोसा रो फरमान आयग्यो कै देवी नैं अबै स्कूल नीं भेजणी है अर वा ऊपर आळै माळियै में ईज बंद रैवैला, जद तांई कै ब्यांव रो दिन नीं आय जावै। देवी मौसर प्रथा री भेंट चढण आळी ही।

पण दादोसा री लाडेसर, इयां हार कियां मान लेवै? रोती-रोती, दादोसा नैं याद करती आज देवी भूखी ई सोयगी ही। सुपनै में दादोसा आया। देवी रो माथो खोळै में लेय'र माथै हाथ फेरयो अर बोल्या, ''बेटा, थूं तो म्हारी जीव-जड़ी है। घणा भाटा पूज्या जणै थारो मूंडो देख्यो हूं। थूं रो मत। म्हैं जींवतै-जी तो कीं नीं कर सक्यो, पण...।''

''पण कांई दादोसा?'' देवी सुपनो देखती ई बड़बड़ायी।

दादोसा अबकाळै कीं नीं बोल्या, बस होळै-सी मुळक बिखेरता गोखड़ा रै बारै कानी आंगळी ऊंची कर दी अर...।

देवी भर नींद सूं जागी। गोखड़ा सूं झांक्यो तो साम्हीं पुलिस चौकी निजर आयी। देवी समझगी कै दादोसा कांई कैवणो चावता। दिनूगै बा सगळां री निजरां सूं लुकती-छिपती घर सूं बारै निकळगी। सीधी थाणै पूगी। थाणैदार साब दादोसा रा मिंतर हा। भेळा

ई पढ्या-लिख्या हा दोनूं जणा। देवी आपरा पुलिस दादा नैं सगळी बात बताय दी। दादोसा रो सुपनो ई सुणाय दियो।

पुलिस दादा माथै पर हाथ फेर'र देवी नैं धीजो बंधायो अर वचन दियो कै म्हैं टेम माथै आय जावूंला।

कालै पूरा बारह दिन निवड़ग्या हा। नरसिंघदासजी रा सगळा क्रिया-करम पूरा हुयग्या हा। आज गंगा परसादी रै साथै ई देवी रो ब्यांव तय हो। बरात आयगी ही। पैला परसादी रो कार्यक्रम हो, पछै ब्यांव रो।

पण पुलिस दादा वचन पूरो करयो। आखिर वांनै सुरगवासी दोस्त री आखरी इंच्छा पूरी करणी ही। वै ब्यांव रुकवा दियो। च्यारूं भाई हाथाजोड़ी करी पण वै करड़ै कानून री बात माथै अड़ग्या। आखिर देवी अर उण रा दादोसा री जीत हुयी। बरात पाछी मेलणी पड़ी, इणसूं नाराज होय'र समधी केई बरसां तांई देवी रो सगपण बिरादरी में हुवण नीं दियो, पण ब्यांव करणो किणनैं हो?

देवी जी लगा'र पढाई करी। पुलिस दादा उणरी मदद मांय कोई कसर नीं छोडी। आज फेर केई बरसां पछै देवी रो पूरो गांव बीं री गळी मांय भेळो हुयोड़ो हो। पण आज कोई नीं रोय रैयो हो। ढोल-ढमका बाज रैया हा। ना-ना! कोई ब्यांव-सगाई नीं है आज। पुलिस अफसर बणण रै बाद आज देवी पैली बार आपरै गांव आय रैयी है। अबै ना बडा बाबोसा ताना देवै अर ना छोटोड़ा। बाबोसा तो बोत खुस है। गाडी सूं उतरतां ई फूल अर माळावां सूं देवी नैं गळै तांई भर दी सगळा गांवआळा।

अबै तो आखै गांव री छोरियां स्कूल जावै। पढै-लिखै। हरेक छोरी री आंख्यां मांय सुपना है। पण अबै अै सुपना पूरा होवण री आस भी है। पुलिस दादा रिटायर हुयग्या हा। इब गांव रा छोरा-छोरियां नैं शिक्षा देवण रो काम करै। गांव रै बीच चौक में नरसिंघदासजी री मूरती लगवाई है, गांव रा लोगां मिल'र।

देवी रा सगळा गांवआळा सौगन ली है कै कोई घर में मौसर रै नांव माथै कोई नाबालिग छोरी रो ब्यांव नीं हुवैला। असल में जद सूं नैनी-नैनी छोरियां रो ब्यांव बंद हुयो, पूरै गांव में खुसहाली रैवै। छोरियां भरपूर आणंद लेवै बाळपणै रो। जी खुस अर सरीर स्वस्थ। टेम आयां ब्यांव हुवै। साजा-ताजा टाबर जलमै अर छोरियां भी चोखी रैवै। कोई रोग नीं पकड़ै वांनै।

देवी रो गांव तो सुधरग्यो पण म्हारो देस कद सुधरैला? देस री हरेक छोरी देवी अर देवी रै गांव री छोरियां ज्यूं कांई मुगत होय सकैला मौसर जैड़ी कुरीति सूं?

❖❖

उर्मिला माणक गौड़

प्रण

भैयाकुची नैं बाळपणै सूं ई पंखेरुवां सूं लगाव है। घर रै पागती उणां रो अेक छोटो-सो बगीचो है, जिण मांय घणा सारा फळां रा रूंखड़ा है अर उणां माथै भांत-भांत रा जीव-जिनावर बैठै।

वो पढणै-लिखणै अर खेलकूद मांय हमेसा पैलै नंबर रैवै। टीवी सूं उणनैं कीं लगाव नीं है। वो आपरो खाली बगत बगीचै मांय बितावै अर पंखेरुवां सूं दोस्ती करै। उणां रा हाव-भाव घणै ध्यान सूं देखै। उणां री बोली समझणै री कोसिस करै अर कीं हद तलक उणनैं सफळता ई मिली है। आपरै बगीचै मांय वो कबूतर ई पाळ राख्या है। उणां रै अंडा देवणै खातर जग्यां बणाई अर कबूतर वठै अंडा देवै ईज है। औ देख'र वो घणो राजी होवै।

आज मकर संकरांति रो दिन है। च्यारूंमेर पतंगां ई पतंगां उड रैयी है। भैयाकुची भी उडाय रैयो हो। उणरै मांझै सूं कबूतरी उळझ'र अैड़ी पड़ी कै पाछी उठी ई कोनी। उण रा बचिया घणा नैना-नैना है अर वै पूरी तरियां सूं आपरी मां माथै ई आस्रित है। वै अपणै आप चुग्गो ई नीं चुग सकै। भैयाकुची उणां नैं भूखा-तिस्सा अर अेकला देख'र घणो दुखी अर उदास हुयग्यो। उणरै कीं समझ मांय नीं आय रैयो है कै वो बचियां रा प्राण कियां बचावै!

वो आपरै बापू नैं इण बारै मांय सगळी बात बताई। जणै बापू कैयो कै बेटा, थूं इयां कर कै वठीनै बीजै कानी बीजा कबूतरां रा बचिया है। इणां नैं ई उणां रै भेळा छोड दै। होय सकै कै वै कबूतर खुद रै बचियां साथै इणां नैं ई दाणो-पाणी देय देवै अर इणां री जान बच जावै।

ठिकाणो :
गांव-चूंटीसरा
जिला-नागौर
राजस्थान 341001
मो. 8742916957

 ISSN : 2320-0995

भैयाकुची इयां ई करयो अर घणै ध्यान सूं देखतो रैयो। थोड़ी ई जेज में वै कबूतर आं बचियां नैं ई दाणो-पाणी देवण लागग्या तो भैयाकुची री आंख्यां मांय चमक आयगी अर वो खुसी सूं उछळ पड़्यो।

भैयाकुची आज औ प्रण लियो कै अबै म्हैं जिंदगी रै मांय कदैई पतंग नीं उडावूंला अर सगळा संगळियां नैं ई इण बारै मांय बतावूंला अर सब नैं समझावूंला।

घणी चतर

शर्मा भाभी नैं नौकराणी री तलास ही। वा म्हनैं ई कैयो, ''ईशू री मम्मी, कोई चोखी कामआळी हुवै तो बताओ नीं।''

म्हैं कैयो, ''भाभी, म्हैं म्हारी नौकराणी सूं बात करसूं कै वा आपरै घरां ई काम कर देसी कांई? अर आपरै दोय मंजिला बंगलै री साफ-सफाई रो कांई लेसी? वा काम सांतरो करै अर उणरी थाणै मांय पूरी जाणकारी, नांव-पतो ई लिखायोड़ो है अर फोटू भळै दियोड़ी है, जिणसूं कोई चोरी-चपारी अर भागणै रो डर नीं रैवै, पण वा पईसा पूरा ठोक-बजाय'र लेवै।''

''थाणै मांय जावणो अर इतरा झंझट करणा अर ऊपर सूं भळै पईसा बत्ता देवणा। थे रैवण दीज्यो। म्हैं म्हारै हिसाब सूं जोय लेसूं, जिकी म्हारै पड़ता खावै।''

शर्मा भाभी नैं म्हारी बात दाय नीं आयी। उणरै तो कान माथै जूं तलक नीं रैंगी। अेक दिन अेक लुगाई आय'र शर्मा भाभी सूं कैयो, ''म्हनैं काम माथै राखल्यो। म्हैं घणो सांतरो काम करसूं। कदैई सिकायत रो मौको नीं देवूंली। म्हैं गरीब हूं। म्हारो धणी ठोक'र म्हनैं घर बारै काढ दी। म्हनैं फगत दोय बगत री रोटी अर आसरो देय दीज्यो। रुपिया थांरी मरजी रै हिसाब सूं देय दीज्यो। भगवान थांरो भलो करसी।''

शर्मा भाभी रै तो मन रा चींत्या हुयग्या। वा देख्यो कै इण सूं सस्ती नौकराणी म्हनैं भळै कठै मिलसी! ऊबरी-सूबरी रोटी घाल देस्यां अर बंगलै रै किणी खूणै मांय पड़ी रैसी। भाभी नैं उणरो करयोड़ो काम घणो दाय आयो अर वा ई भाभी रो दिल जीत लियो। कीं दिनां पछै भाभी उण माथै पूरो भरोसो ई करण लागगी ही।

अेक दिन सांतरो मौको देख'र वा तो गैणां-गांठा अर रुपिया लेय'र चम्पत हुयगी। अब तो शर्मा भाभी घणी पिछतावै ही कै सस्ती नौकराणी रै चक्कर में नीं पड़ती तो आज आ गत नीं होवती, पण अब पछतायां होवै कांई जद चिड़िया चुगगी खेत।

❖❖

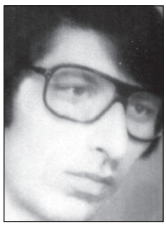

राजेश अरोड़ा

बो ईज हुयग्यो

बदळी हुयनै आया अेक जिला शिक्षा अधिकारी आज नूंवै ऑफिस मांय आपरी ड्यूटी ज्वाइन करी। ऑफिस मांय सगळा करमचारियां सूं परिचै रै पछै बै आपरै चेम्बर मांय बैठग्या।

बाबूलाल ग्रुप 'डी' आपरी ड्यूटी मुजब सगळा करमचारियां नैं पाणी पावतो थको साब री टेबल माथै ई पाणी रो गिलास राखग्यो।

लंच रो टेम हुयो। साब उठ'र चल्या गया। बाबूलाल फाईलां आद लेवण नै साब रै चेंबर मांय गयो। देख्यो, टेबल माथै पाणी रो गिलास बियां रो बियां ई पड़्यो है। आज पैली बार उणनैं खुद रै शूद्र हुवण रो दुख मैसूस हुयो।

बाबूलाल सोची, ''अबै म्हैं ई साब नैं समै रै साथै चालणो सिखाऊंलो।''

साब लंच सूं पाछा आया तो बाबूलाल साब रै चेंबर मांय गयो अर बोल्यो, ''साबजी! म्हैं अेक शूद्र हूं अर आप ब्राह्मण, इण खातर ई आप म्हारै हाथां रो पाणी कोनी पीयो नीं। इण रो मतलब है—आप मिनख-मिनख मांय भेद करो हो। कारण कै हरेक मिनख रा हाड-मांस अेक सिरसा हुवै। हरेक मिनख रो अेक सिरसो मज्जा-जाळ हुवै। हरेक मिनख री नाड़्यां मांय अेक सिरसो लाल रंग रो रगत बैवै। हरेक मिनख रै भीतर अेक सिरसी आतमा रो रैवास हुवै।''

कैयनै बाबूलाल फेरूं बोल्यो, ''साबजी! जे आपरै कनै भेद रो कोई कारण हुवै तो म्हनैं ई बतावो जणां म्हारै मन रो बैम दूर हुवै।''

ठिकाणो :
भारतीय डाक विभाग
गजसिंहपुर 335024
श्रीगंगानगर (राज.)
मो. 8619060355

 ISSN : 2320-0995

साब मून रैया।

आगलै दिन साब ड्यूटी माथै आया। कुरसी माथै बैठतां ई बोल्या, ''बाबूलाल! ल्या, पाणी झला अर साथै दो चाय रो ई बोल'र आव। रळ'र पीस्यां।''

सुण'र बाबूलाल री खुसी रो कोई ठिकाणो नीं रैयो, क्यूंकै उण जिको सोच्यो, बो ईज हुयग्यो हो।

समाज-सेवा

अेक पढेसरी अध्यापक सूं सवाल पूछ्यो, ''सर! अेक अति महत्त्वपूर्ण सेवा जिकी मिनख समाज सारू कर सकै, बा कांई है?

अध्यापक उल्थो दियो, ''बेटा, बो है—अपणै आपरो सुधार।

❖❖

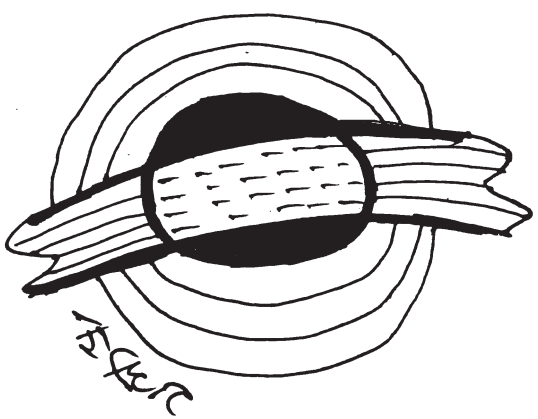

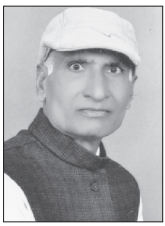

निशान्त

कळह आळो घर

बीं घर री म्हारै घर सूं पीठ लागै। आंगणै में पड़्यो, म्हैं सुण्या करूं। बांरै घरै सारै दिन रोळो माच्यो रैवै। बाप-बेटो लड़ै। म्हैं सोचूं—अै लूखा टुकड़ा खावै, फेरूं ई आं मांय इत्ती ऊरजा कठै सूं आवै कै अै सारै दिन बोलता रैवै? बोलै ई होळै कोनी। बांरी राड़ रा बोल, बांरली अर म्हारली दोनूं छातां नैं पार कर'र म्हारै आंगणै तांई साफ सुणीजै। घर में दांतो बाजतो आछो नीं गिणीजै। फेरूं ई बै बजावै। इण दांतै रै कारण ई घर रै जवान बेटै रो कतल हो चुक्यो है। कैवण नैं तो कैय देवां—कीं रै सारै है? हूणी नैं नमस्कार है! पण करै आदमी खुद है।

औ घर सदां सूं इस्यो नीं हो। इण घर रा मुखिया आदमी अर लुगाई जद जवान हा, आंरो सुख रो संसार हो। आंरै नैन्हा-नैन्हा टाबर हा। गोर-निछोर, खूब सूंणा। फूटरी लुगाई रा जायोड़ा। टाबरां रो नानो ई घणो फूटरो हो। लांबो-चौड़ो। साधुआं आळो-सो भेख राखतो। कदै-कदै आं कनै आवतो। केई दिन लगावतो। आछी-आछी बातां बतावतो। पण बां सारियां पर अब तो धूड़ फिरगी। बो ई बिचारो मर-खपग्यो। गामां रै खेतां में ढाणी ले ज्यै। साल भर रा दाणा बणा ल्यावै। नरमै-कपास रै टेम चुगाई करण चल्या जावै। साल भर रो खरचो-पाणी बणा लावै। दिहाड़ी-मजूरी तो सारै साल ई चालै। सदां मजै में रैया। अब भी भूख नीं है। पण घर में राड़ चालै। बीं कारण सारा काळा ढेरा हुय रैया है। आदमी नैं दारू री कुबाण है। बडोड़ो बेटो भी पीया करतो। जद बीं रो कतल हुयो, बीं नैं होस नीं हो।

ठिकाणो :
वार्ड नं. 6,
निकट वन विभाग
पीलीबंगा 335803
हनुमानगढ़ (राज.)
मो. 8104473197

 ISSN : 2320-0995

इण घर में राड़ री सरुआत तद हुई जद अै आपआळो बडोड़ो बेटो परणा'र लाया। बीनणी में खोट हो कै पतो नीं सासू में। ठाह नीं मियां-बीबी में नीं बणी। बीनणी तो अेक-दो टाबर हुवतां ई पीहर चली गई। साल-दो साल कोर्ट-कचैड़ी भी हुया। आखिर पंचायती फैसलो हुयो कै बेटो सासरै में आय'र रैवै। दिहाड़ी-मजूरी बठै करै, दिहाड़ी-मजूरी अठै कर लेसी। कोई खास बात नीं ही, बेटो चल्यो गयो। आंरै अेक छोटो बेटो और हो। आं बीं नैं परणायो। पण आ बीनणी भी बडोड़ी रै पगां चाल पड़ी। बै ई सागी सांग। कदै पीहर चली जावै, कदै अठै आय जावै। अेक-दो टाबर हुवतां ई न्यारी और हुयगी। घर में ई अेक कूणै मांय। ले-दे में राड़ रैवती

बडोड़ै छोरै सासरै में केई साल तो काट्या, पण आखर हार'र बो घरै आयग्यो। मुकदमाबाजी चालती रैयी। थोड़ै सालां में लुगाई चालती रैयी। टाबर इणरै गळै आ पड़्या। आणा ई हा। जद तांई इण छोरै री बडोड़ी बेटी परणावण जोगी होयगी। परणाय भी दी। आंनै बेटी परणावण मांय कोई खास जोर नीं आवै। केई समाजू संस्थावां कन्यावां रो ब्यांव करवावै। आड़ोसी-पाड़ोसी भी मदद कर देवै। इण रा बेटा भी जवान हुयग्या। अब घर में तीन-तीन पाणा मंडग्या। छोटियो मां-बाप सूं लड़ै। भाई सूं भी लड़ै। बडोड़ो बेटां सूं लड़ै। छोटियै री अेक पाड़ोसी सूं भी राड़ हुयगी। बीं सागै केस चालै। आंरी आ राड़ इयां भी बधै कै औ चावै पाड़ोसी आळै मुकदमै मांय बाकी घरआळा भी बीं री मदद करै, पण बै कैवै—म्हे पूरा नीं आवां।

आं रै इण दांतै रो अेक मोटो रिजल्ट औ आयो कै बडोड़ै बेटै रो मोबी बेटो आपरै बाप रो ईंट मार-मार'र कतल कर नांख्यो अर थाणै में जाय'र पेस हुयग्यो। बो आजकाल कैद मांय है। आंनै तो कै उजर-दावो करणो हो? सरकार जियां चासी, करसी।

इण घर में इत्ती राड़ क्यूं है? तंगी रो तो कोई कारण निगै नीं आवै, क्यूंकै आंरो अेक दूजो भाई आंरै पाड़ोस में रैवै। बीं रै भी तीन बेटा है। बीनण्यां है। पोता-पोत्यां है, पण बांरै घरै राड़ रो नाम ई नीं। तीनूं बेटा आछो खावै-कमावै। मां-बाप नैं खवावै। करै तो बै ई दिहाड़ी-मजूरी है अर बा ई दिहाड़ी-मजूरी अै करै। कळह आळै घर रो बूढियो अर बूढळी खुद कमा'र खावै। बेटै-पोतां रो बांनै कीं सुख नीं है। उलटो राड़ रो दुख है।

राड़ रो कारण कीं निगै आवै तो औ आवै कै इण घर में आवण आळी बीनण्यां ई इण घर नैं लेय बैठी। जे बै सूल रैवती, बांरा मां-बाप जे बांनै आछी शिक्षा अर संस्कार देंवता तो स्यात आंरा अै हाल नीं होवता। अब कांई है? बूढियो-बूढळी सूख'र काळा ढेरा हुय रैया है। जींवती ल्हासां। बीं घर सूं अजै भी लड़ाई री आवाजां आवै। छोटियो बेटो मां-बाप सूं लड़ै। सुणी है कै घरआळा इयां भी कैवै कै इणरो दिमाग हाल रैयो है। हालणो ई हो। आं हालातां में बडै-बडां रो दिमाग हाल जावै।

❖❖

अनिला राखेचा

म्हारो लाडेसर

जद कोई दूर रैवै तो उणरी ओळ्यूं कनै रैवै। बीं टेम आपां खुद मांय कोनी रैवां हां। आपां रो मन चेतन हुय जावै। चितारां रो कारखानो बण जावै। अब देखो नीं, आज भी म्हारो हिवड़ो बणग्यो है कारखानो। अेक याद आवै, अेक चितार जावै है। लगोतार बिना थम्यां, बिना रुक्यां।

आज म्हारै लाडेसर रो जलमदिन है, पण बो म्हारै कनै कोनी। आपरा पग मजबूत करण, आपरो नूंवो उजास बणावण खातर गयो है म्हासूं दूर परदेस मांय। बीं रो जाणो खराब तो भोत लाग्यो हो, पण नूंवै आभै मांय उडण खातर पांख्यां भी ताकतवर हुवणी चाईजै नीं, बस... भेज दियो हिवड़ै पर भाटो राख'र...।

आज सूं 26 साल पैलां इण फूल नैं म्हैं पैली बार देख्यो हो, जद सूं लेय'र आज तांई इण फूल री सौरम तो जीवण मांय बसगी, पण फूल म्हारै कनै कोनी। आज भोर सूं नीं, काल रात सूं ई बीं री याद भोत आ रैयी ही। इयां लाग रैयो है कै म्हारी यादां नैं आज कोई लेबर पेन उठ्यो है अर अेक-अेक मरोड़ सागै बीं री अेक-अेक बडी-छोटी हर बात हिवड़ै मांय जलम ले रैयी है। किसी बात नैं आप सूं सीर करूं अर किसी नैं नीं, समझ में नीं आवै। असंख्य बातां है बीं रै बारै मांय कैवण री। इत्ती कै आपनैं सुणतां-सुणतां अेक किताब बण सकै, पण बातां री कलम तो रुकै नीं। म्हारो लाडेसर म्हारी अणगिण कथावां रो नायक रैयो है। कित्ती कवितावां नैं लिखण री प्रेरणा म्हनैं बीं सूं मिली है, बताणो मुस्कल है।

ठिकाणो :
124 ए, मोतीलाल नेहरू रोड, आशीर्वाद बिल्डिंग फ्लेट-2 बी, द्वितीय तल कोलकाता 700029
मो. 9051806915

 ISSN : 2320-0995

पण आज जद बगत री धार नैं पूठी फेर'र देखूं तो बीं रो टाबरपणो भोत याद आवै है। आंख्यां रै साम्हीं उभरै है अेक गेहूंआ रंग रो दुबळो-पतळो चार साल रो टाबर, आपरै कमर तांई लांबा घुंघराळा बालां नैं खोल'र फगत अेक कच्छो पैर'र नाचतो-दौड़तो, भाजतो आपरी मीठी आवाज मांय गा रैयो है :

जंगल-जंगल बात चली है, पता चला है
चड्डी पहन के फूल खिला है, फूल खिला है

या फेर गैरी नींद में सूत्योड़ो अेक ढाई साल रो टाबर जको नींद मांय सूत्यो-सूत्यो ई होळै-होळै आपरा हाथ-पग मटकावण लागै है। खाली अेक गाणो सुण'र :

तूतू तू तूतू तू तूतू तारा, तोड़ो ना दिल हमारा

हाऽहाऽऽहाऽऽ, हैं नीं मजेदार बात... पण बीं नैं इण गाणा रो संगीत भी बालपणै में भोत पसंद हो। जद कठैई औ गाणो बाज रैयो हुवतो तो बो बठैई खड़्यो होय'र नाचण लाग जावतो। आपरै मनमोवणै अर नखराळै अंदाज मांय।

बीं री अेक बात ही जकी म्हनैं बीं रै छुटपणै मांय भोत ई माड़ी लागती ही—बो कदैई किणी नैं सॉरी कोनी बोलतो हो... सॉरी नीं बोलण वास्तै डांट खाणी मंजूर ही, पण सॉरी बोलणो मंजूर कोनी हा। हां, इण बात री मन में शांति ही कै बो उण गलती नैं फेरूं कदैई करतो कोनी हो।

अेक बात और ध्यान मांय आय रैयी है। बां दिनां मांय अेक सिनेमा जबरदस्त हिट हुयोड़ी ही 'खलनायक'। इण फिलम रै किरदार री नकल तो बो चार साल री उमर मांय बिसी री बिसी उतारतो हो। बियां ई माथै पर टोपी लगा'र हाथ मांय गेडियो लेय'र आपरा लांबा-लांबा बालां नैं लैरावतो थको (बीं टेम तांई बीं रो झड्लो नीं उतारीज्यो हो)। अरे... आ कांई... म्हैं तो खाली बीं रो बालपणो ई चितारयां जावूं हूं!

आज कैवण खातर बातां तो घणी सारी है। इयां लागै है जियां गुजरयोड़ै बगत री बाढ-सी आयगी है आज। सबदां री इत्ती तेज हिलोरां उठ रैयी है कै किसै सबद नैं पकड़ूं अर किसै सबद नैं लिखूं, समझ में ई कोनी आ रैयो है। बीं री भोळी मुळक रो जिकर करूं कै चस्मै रै लारै सूं झांकती बीं री मासूमियत रो बखाण करूं (जिकी आज भी बीं रै चेहरै पर चिपक्योड़ी है फेविकॉल रै बेजोड़ जोड़ री तरियां) या पछै करूं बीं री हर छोटी-बड़ी बदमास्यां री बात जिकी नैं कर'र बो सारै दिन म्हनैं अणखावतो रैवतो हो। आं सगळी बातां नैं छोड'र आज अगर बीं रै बारै मांय अेक सबद में कैवूं तो कहसूं कै बिल्कुल पाणी री तरियां है म्हारो लाडेसर। पाणी, जकै रै बिना जीवणै रो सोचणो भी बेकार है। पाणी जको हर आकार मांय खुद नैं ढाळ लेवै। पाणी जको हर रंग मांय मिल जावै। पाणी जको हर रोड़ै नैं पार करतो आगै बधणो जाणै अर आपरो रस्तो खुद बणाणो जाणै।

आज आप लोगां सागै बातां तो मोकळी हुयगी। जावतां-जावतां म्हारै लाडेसर ताण आपनैं अेक बात कैवणी चावूं हूं।

बो आपरी जिनगाणी में कठैई ठैरणो नीं चाईजै... बधतो रैवै... बैवतो रैवै... झरणै री तरियां कळ-कळ... ताळ-तळैया-सरोवर री लैर-लैर मांय। नदी री तरियां सगळा नैं सागै लेय'र आगै बधतो रैवै जीवण सागर री ओर... क्यूं कै ठैरयोड़ा पाणी री सौरम तो शेष हो ई जावै है नीं... अर जमण लाग जावै बीं पर काई... औ कांई आलो पाणी कीं काम रो कोनी रैवै!

म्हारो लाडेसर म्हासूं दूर भलांई रैवो, बीं री ओळूं सदां ई म्हारै साथै रैसी। बीं रो चैरो नीं देख सकूं भलांई रोज, पण बीं री बातां सदां ई सागै रैसी।

❖❖

 ISSN : 2320-0995

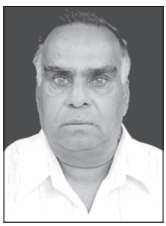

डॉ. रमेश 'मयंक'

रेत—आखरी पड़ाव

मां भोग्यो अेकलापणो,
बुढापो, घणो अणमणो
धणी-लुगाई रै बिच्चै आंतरो
सीमाड़ै रै पार देस रो बंटवारो
देह-लकड़ी मांय दीमक जणायो
आवण वाळो समै
रेत मांय समाधि जैड़ो लखायो
जको आखिरी पड़ाव होसी
वा जाणगी—
रेत मांय समाणो है
बगैर निसाण छोड्यां रेत
बदळती रैवै ठाण
पण वा दूजी ठौड़ सूं अणजाण है।

रेत मांय सैनाण

मां देख्यो
सीमाड़ै पार लुगायां रो
आवणो-जावणो,
मां सोच्यो—
अेकलापणै री जिनगाणी क्यूं आवै ?
जो बोझ सरीखी जणावै।

ठिकाणो :
बी-8, मीरानगर
चित्तौड़गढ़ 312001
मो. 7023664777

ऊगती घास, बायरा सागै
देह नैं उकसावती
डूबता सूरज रै सागै
वा भी अेक दिन
कहाणी बण जावैगा
लेहरियादार धारां रा मंडाण मांय
कुण उण रा सैनाण सोध पावैगा ?

रेत मांय घर

रेतीला धोरा मांय
अेक ईज लुगाई रा पगल्या
न्यारा-न्यारा मंडता जावै,
अेक बींदणी बण आवै
सोनल पगल्यां रो मंडाण
कुळदीपक देवता निभावै
सगळी रीत-रसाण

अर दूजो सरूप
सीमाड़ै री भींत मांय
छेकड़ली सोधती
इतरी आगै निकळ जावै
बेटी समै री रेत री भांत
मुट्ठी सूं खिसकती जणावै,

बेटी अर बीनणी
दोन्यूं मावड़...
समै रै लार-खौस लेवै
ओढणी नैं कमर रै
अर रम जावै आछी भांत
नूंवा घर रै।

रेत रो मायतपणो

रेत मांय बांस
छितराई ढाणियां रा
दरवाजा-खिड़कियां सूं
मांयनै-बारणै आवती-जावती
चिड़कल्यां तण्यो-तण्यो भेळो करै,
घूंसाळो बणावै
जिनगाणी री नरम-गरम तावड़ी रै सागै
चीं-चीं रा सुर मायड़पणो जगावै

पण जद जणावै बारूदी गंध
चिड़कल्यां दीखती हुय जावै बंद
तोता-कागला-गौरैया-गोडावण
कबूतर कठै गम जावै ?

सीमाड़ै री सीम मांय
परती सून्याड़
मां-बाप सारू बुढापा री लाकड़ी
लागण लागै जबरो पहाड़

आसमान मांय चंदरमा
सांचीलो कै कळपना
उदासी कै उछाव
टूटण-जुड़ण
सनिमा री रील री भांत
खुलता-सिमटता रैवै
हथेळी-मुट्ठी सूं सिरकती
रेत रा कण कद ठमै
लोग काल-परसूं री बात ज्यूं
अस्यान ईज गमै क्यूं ?

❖❖

ISSN : 2320-0995

राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर'

जीव-जूण

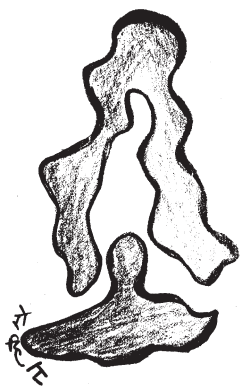

जुगां सूं
सुणता आवां हां कै
सांपला
गादड़ा
गंडकड़ा
लूंकड़ा
किरड़ा
चींचड़ा...
भोत माड़ा हुवै
अै तो बापड़ा जिनावर है
सुभाव मुजब ई करै बरताव
क्यूं भिस्टै मानखो
जिनावरां नैं!

मिनख रै खोळियै में ई मिलै
जाबक माड़ा
मिनखजात रा खून पीवणवाळा
कंवळै पुसपां नैं
कंवळी कळियां नैं
मसळण वाळा कुजीव
अै कुणसी जूण रा है!

जिनावर?
राकस?

ठिकाणो :
सावित्री सदन
सी-122
अग्रसेन नगर, चूरू
राजस्थान 331001
मो. 7976822790

मिनख ?...
अै तो कदैई नीं!
आं सूं परलै पार
आंनै टाळ ई
कोई जूण हुवै तो बताइयो!

बदळाव

पैली—
घरां सूं निसर्‌या गेला
दूजै, तीजै कै चौथै घरां
कै पछै आंतरै
गवाड़ जायनै पूठा
बावड़ जावता
सागी आपरै घरां
ठावी ठौड़।

आज—
घर सूं निसर्‌या गेला
घर-गवाड़ डाकता थका
पूगै खाकी री चौखट
धोळपोस री कोठी
बैनरबंद दळदळ में
चौरावां री निखट्टू भीड़ भेळै
इण पछै ठाह नीं
गेला कठै गम जावै
पूठा बावड़नै
घर ताणी कोनी पूगै।
❖❖

ISSN : 2320-0995

डॉ. गौरीशंकर प्रजापत

रावण री पीड़

दसरावै माथै
हर साल बणै रावण रा पूतळा
देख'र हरखावै मानखो
मारण नैं उमावै राम,
जद आवै
रावण-दहन रो बगत नैड़ो
देख'र राम नैं
रावण नैं व्है अचंभो।
म्हैं तो अेकर हरी ही सीता
औ रावण, राम बणियो
रोज करै चीरहरण
अबलावां रो
गावो थे इण रा गुण
देवो इणनैं जनमत।
म्हनैं म्हारै ई वंस सूं तो
ना मरवावो!
इण धोळै चोळा लारै
बैठो है रावण
इणनैं तो पैचाणो।
म्हनैं मारण सारू कोई
सच्चा राम तो लावो।
नीं जणै इण राम-रहीमां रा ई
पूतळा बणावो।

ठिकाणो :
व्याख्याता, राजस्थानी
श्री नेहरू शारदापीठ पीजी
कॉलेज, जस्सूसर गेट
बीकानेर (राजस्थान)
मो. 9414582385

मीठो सुवाद

बिरखा रो
पालर पाणी
जियां ई पूगै
रूंखां री जड़ां में
बदळ जावै
फळां रै मिठास में।

ओस री बूंद री भांत
गिरूंला
थारै होठां पर
उतर जासूं
भीतर तांई
निकेवळो सुवाद बण'र।

दरपण

थूं फगत
दिखा'र चैरा रो फुठरापो
लोगां नैं भरमावै
कास! थारै कनै
होवती कळा
हियै री हकीकत
दिखावण री
नीं खावती
कोई धोखो
आपरां सूं।

❖❖

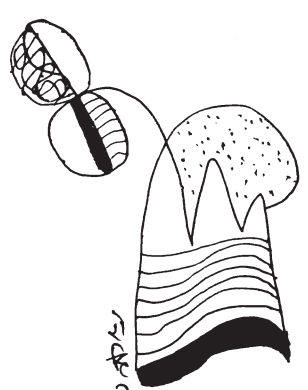

ISSN : 2320-0995

मीनाक्षी पारीक

प्रेम री कूंची

हे गिरधर, हे सांवरा!
म्हारा विचारां नैं
म्हारा इरादां नैं
म्हारा हौसला नैं
देवो उडाण इत्ती ऊंची कै म्हैं
सुकून दे सकूं इण धरा नैं
इण जीव-जाति नैं
खुसी देऊं सुपना सूं ऊंची
धरा ई नीं, आकास तक छू जावै
म्हारा दोन्यूं हाथ
अर पूरा जहान पर चलाऊं
प्रेम री कूंची।

प्रेम री कूंची इसी हुवै
मिटै सगळा विरोधी भाव
तरुरो अर ताव।
प्रेम रस रा रंग सूं रंग द्यूं
ठौर-ठौर समूची।

किसी भी जगहां न रवै
जठै प्रीत रो छींटो न पड़ै
भलां ही घर / दुआर / बस्ती / गांव अर स्हैर
अर हर कोई छोटी-मोटी हस्ती

ठिकाणो :
33, ओमनगर
सफेद मिंदर रै कनै
खातीपुरा, जयपुर
मो. 9351518100

सगळां सूं मिल'र पूरी हुवै
म्हारी सूची।

विश्वास रा, स्नेह रा, दुलार रा
अपणायत रा भावां रा
चितराम उकेरूं
हरेक मानस-पटल माथै
हरेक मिनख रै मन में
नेक इरादा हुवै
अर हंसतो मिजाज हुवै
काम-काज रो भान हुवै
देस, धरा रो घणो मान हुवै
सच्चाई अर अच्छाई में हुवै
सब री रुचि
हे भगवान! म्हांनै देवो
इस्यान की कूंची।

लड़ाई-दंगा
जाति अर भेदभाव
जियांन का भड़काऊ
अविस्वास री कुपौध उपजाबा हाळी
खरपतवार
सब नैं लागै घणी-घणी **नीची**
इसी रचै हर हिवड़ै
प्रेम री रुचि।
अर फेर जळै
प्रेम री बाती सूं
सुख-सांति रो दिवलो
अर उजळी होय हरसावै
या धरा समूची।

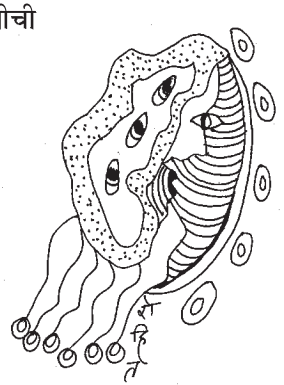

❖❖

ISSN : 2320-0995

तरनीजा मोहन राठौड़ 'तंवराणी'

सियाळो

बाजै ठाडो ठाडो बायरो...
रे आयो! सनन सनन सियाळो
बाजरी री राब अर मक्की री घाट
चार मास जमावण नै आपरी खाट
रे आयो! सनन सनन सियाळो
गूदड़ा में पड़िया रैवण रो
नैना दिन अर मोटी रातां रो
रे आयो! सनन सनन सियाळो
घर-घर घाट-घाट महकैला
खीचिया, राबोड़ियां रा गेला
रे आयो! सनन सनन सियाळो
रात री हथायां अर धूणा जागसी
चिलम अर मऊड़ै रा महका होसी
रे आयो! सनन सनन सियाळो
तावड़ै रो ताप सुहावसी
काकड़ बोर मतीरा पाकसी
रे आयो! सनन सनन सियाळो
आओ रे भाईड़ां! जाबतो करां
लाडू सूंठ रा संधाणां करां
रे आयो! सनन सनन सियाळो
भेळा होय'र सगळा चूल्है कनै चावड़ी घोटावां
घी चूरमै री चिड़िया बोलावा
रे आयो! सनन सनन सियाळो।

ठिकाणो :
द्वारा ठा. भगवतसिंह उदावत
रिटायर्ड एस.पी.
रावळा मोहरा कलां
वाया-पिपलिया कलां,
जिला-पाली 306307
मो. 9829110475

गैली राधा

उण दिवसां री बात छै
हूं कंवळी कूंपळ ज्यूं हुवती ही
कंचन काया आईनै मांय देख मुळकती ही
भंवरां री दीठ सूं इणनैं बचाय राखती ही
जद सुणिया सबद थारै मन रा
हरख-हरख कर दरसण रो चाव राखती
साम्हीं कदैई नीं पड़्यो रे कान्हा!
पण हूं थनैं ओळखती
मीरा री प्रीत पर ना इतरा रै कान्हा,
उणरी प्रीत लौकिक रै कान्हा,
म्हारी प्रीत सूं मत जोड़ी
आ तो अंतस में रम्योड़ी अलौकिक रै कान्हा

कान्हा!
केई बरसां सूं थनैं उडीकूं
भर नैणां में पाणी
जद थूं मिल जावै अेकर सुपनै में आय
म्हारै धीरज रो छैह आ जासी
अणजाणै में म्हारै मूंडै सूं फगत
'कान्ह' निकळसी
जद जग हंसैलो अर म्हनैं गैली राधा कैसी
पण थूं चिंता मत करजै!

कान्हा!
म्हारै हिवड़ै में थूं सदा
इयां ई रैसी
म्हारी सखियां कैवै—
रैळी-बावळी राधा थूं मन में मोद करै
नैणां में गुमेज भरै
कै...
थूं कान्हा री अर कान्हो थारो
होस में आ जा
कान्हो थनैं बिसरग्यो
छोड़ थारी अणगाती प्रेम री गळियां
किणी राणी रै मन बसग्यो
इसा सबदां रा बाण कान्हा
म्हारै हियै नैं रुवाणै
पण थारी म्हारी प्रीत नैं
नाजोगा कांई जाणै?
कोसिस रा पग टूट जावै
जद थूं म्हनैं याद करै
थारी अमर प्रेम री सौरम
फूलां-फूलां में महकावै,
थारै नैणां रो नेह
जणा-जणा में छळकै
पण नेह रो छैड़ो थांसूं छूटै कोनी
थारी ओप हिवड़ै सूं जावै कोनी
नीं कान्ह, नीं
थारो-म्हारो ब्यांव कोनी हो सकै
आ बात म्हारै हिवड़ै में सूळ-सी चुभै
पण जद आंकूं थारी-म्हारी प्रीत नैं
निष्काम भावां सूं समरपित हो जाऊं
नईं कान्ह! नईं
थारो-म्हारो ब्यांव कोनी हो सकै
क्यूंकै अेक जीव रा
दो अलग-अलग सरीर हां आपां
थूं म्हारो कान्हो है
अर हूं थारी गैली राधा।

❖❖

ISSN : 2320-0995

मदनलाल गुर्जर 'सरल'

मनड़ो म्हारो हरख रियो है

साजन म्हारा आज पधारया, झूम उठ्यो है जोबनियो मनड़ो म्हारो हरख रियो है, नाच उठ्यो है आंगणियो काळा बादळ जोर गरजता, म्हैं डर ज्याती रातां में कुम्हळी-कुम्हळी रहती मैं तो सावण री बरसातां में टप-टप-टप आंसूड़ा बहता, घुळ-घुळ ज्यातो काजळियो मनड़ो म्हारो हरख रियो है....

आणै रा समचार हुया तो हिवड़ो म्हारो झूम उठ्यो मन रो भंवरो हरख-हरख के, कळी-कळी नैं चूम उठ्यो रिमझिम बरसण लाग्यो सावण, बोलण लाग्यो कागलियो मनड़ो म्हारो हरख रियो है....

हाथां में मैंदी खूब रचाई, सोळा म्हैं सिणगार करया रंग-बिरंगो लहरियो ओढ्यो, मीठा भोजन त्यार करया बांदरवाळ बंधाई म्हैं तो खूब सजायो बारणियो मनड़ो म्हारो हरख रियो है....

मात-पिता नैं शीश निवायो, बैनड़ रै सिर हाथ धरयो देख म्हनैं बै मुळकण लाग्या, म्हारो हिवड़ो खूब भरयो पायलड़ली भी गावण लागी, झूमण लाग्यो काळजियो मनड़ो म्हारो हरख रियो है....

ठिकाणो :
हनुमान धोरा बास
सुजानगढ़ (चूरू)
राजस्थान 331507
मो. 7014042968

सुण-सुण थांनै बिरहण रोवै

मुधरो-मुधरो बोल मोरिया, क्यूं कुरळावै रातां में सुण-सुण थांनै बिरहण रोवै, सावण री बरसातां में

काळा-काळा बादळ छाया, बिजळी चमकै जोर घणी
डर-डर के बा रात्यूं जागै, थर-थर कांपै और घणी
धीर बंधा दे 'बीरो' बणकर, तूं बिलमादै बातां में
सुण-सुण थांनै बिरहण रोवै....
साजन बीं रा दूर गया है, किणनैं पीड़ सुणावै बा
नणदूली रा ताना सुण-सुण, आंसूड़ा ढळकावै बा
पायलड़ी भी सिसकण लागी, मैंदी बिलखै हाथां में
सुण-सुण थांनै बिरहण रोवै....
दर्पणियो भी आंख्यां काढै, मुखड़ो देखै जद-जद बा
आडो-टेढो बोलै जालिम, मांग भरै है जद-जद बा
बळ-बळ बा तो दुबळी हुगी, झुरियां पड़गी गातां में
सुण-सुण थांनै बिरहण रोवै....

सैनां-सैनां में ही बा तो...

अेक चिड़कली छत पर आवै, सैनां में समझावै सा
सैनां-सैनां में ही बा तो, गहरी बात बतावै सा
सांझ पड़्यां स्यूं घर में रहणूं, घर में टेम बिताणूं सा
क्लबां में और डिस्को बारां, भूल-चूक नीं जाणूं सा
घर में रहवाळी नारी तो, घर री आन बढावै सा
सैनां-सैनां में ही बा तो....
भोर हुयां स्यूं पैल्यां-पैल्यां, बिस्तर स्यूं उठ ज्याणूं है
सास-सुसरै नैं सबस्यूं पैल्यां, थांनै शीश नवाणूं है
दीया-बाती रोज कर्‌्यां स्यूं, घर में लिछमी आवै सा
सैनां-सैनां में ही बा तो....
सब स्यूं मीठा बोलो घर में, सब स्यूं प्रेम निभावो थे
काम-काज अरु सेवा कर-कर, थांरो फर्ज निभावो थे
सतवंती अर लजवंती की, महिमा दुनिया गावै सा
सैनां-सैनां में ही बा तो....

❖❖

 ISSN : 2320-0995

जयप्रकाश अग्रवाल (चैनवाला)

भोरा

(1)
नीम कै रस में डुबकी लगा'र,
जिंदगी नागी।
आंख्यां कै साम्हीं आगी।
पाणी हुग्यो खारो,
मन में जियां आग लागी।

(2)
घमंडी समदर सूं डर,
भाजती लहरां छुपगी।
हवां कै ठंडै आंचल में।
ईं खेल नैं देखतो चांद,
लुकग्यो बादळां कै काजळ में।

(3)
खुद की बातां में आ कै,
आपकै पगां पै,
मार ली कुल्हाड़ी।
दुनिया कै चक्कर में पड़,
खुद ई बात बिगाड़ी,
दुनिया खड़ी उघाड़ी

(4)
प्यार आंधो नईं, हुवै सिरफ काणो।
जद जी चावै—
ले'र फरज को बहानो,
खोल देवै बंद आंख,
खुद नैं लुटा देवै—खुद नैं मिटा देवै।

ठिकाणो :
मकान नं.15,
कोहिनूर हिल हाउसिंग
BAFAL काठमांडू, नेपाल
मो. 9840006847

(5)
दुविधा कै कांटां में अटक,
हुयो द्रौपदी को चीरहरण।
हर घर में जाम्यो अेक रावण।
सागै महाभारत, सागै रामायण
सच बोलणै सूं डरै दरपण,
द्रौपदी, रावण अर उळझण।

चार चौका

आछा-माड़ा दिन तो आवै है भागां सूं
हाथी भी बंध जावै है, काचा तागां सूं
धाक जमावणआळा, गाल बजावण आळा
मांडै कोनी राड़ कदै भी, बै नागां सूं।

भाजतै चोर की तो हुवै लंगोटी आछी
ताती नईं मिलै तो रात की रोटी आछी
सच नैं समझ मन नैं समझा ले बो जीतै,
नईं सूं तो घर में लुगाई खोटी आछी।

बता कुण आपको, दुनिया तो बस मेळो है
दोस्ती-रिश्ता, सगळा दिखावटी खेलो है
बटोर्‌यो सारी उमर किंकै लियै बावळा तूं,
आया सै अेकला ई, जाणो भी अेकलो है।

किंकै जीवण में आई नईं, मुसीबत बड़ी
किंकै साम्हीं हुई नईं, कोई आफत खड़ी
चोखो-माड़ो आवै जियां हुवै रात-दिन,
जियां आवै, बियां चली जावै बुरी घड़ी।

❖❖

 ISSN : 2320-0995

दीपसिंह भाटी

हैफा हीरो मेजर दलपतसिंह शेखावत

भारत देस रा सूरमा धरम, धरती अर कर्तव्यपाळण में आखै संसार में आगीवाण रैया है। अठै रा अलबेलां सूरां पूरां आपरै रगत री होळी खेल भारत माता री आदू रीतां नैं अखी राखी। अठै रा बांकड़ां जोधारां आपरी तलवार री धार सूं इतिहास लिख्यो। भारत रो भळकतो इतिहास स्याही सूं नीं, रांगड़ां रै रगत सूं लिख्योड़ो है। वीरां री जरणी इण भारत भोम माथै केई अैड़ा सपूत हुया जिणां अपणै देस सूं ई बारै विदेसी धरती माथै तोपां अर बंदूकां रा मूंडा तलवारां अर भालां सूं दाट्या। लुक-छिप बंदूक सूं गोळी चलावणी कोई मोटी बात कोनी, पण साम्हीं छाती तलवार सूं दुसमीं नै वाकारण सारू जुध करवा में दो आंगळ छाती रै सागै कीं गाढ चाईजै। आज म्हैं आपनैं भारत माता रै सूरां पूरां री आदू मरजाद नैं संसार रै नक्सै माथै भळकावण वाळै अेक सपूत री बात सुणाऊं।

तो रामजी आपनैं भला दिन देवै कै मध्य पूरब अेसिया महाद्वीप में अेक छोटो-सो देस आयोड़ो है फिलिस्तीन जको आज इजराईल बाजै। फिलिस्तीन में माउंट कारमेल रै उत्तरी ढळाण तांई भूमध्य सागर रै कनै अेक तटीय बंदरगाह कनै स्हैर आयोड़ो, जिणरो नांव है—हाइफा। फिलिस्तीन रो खास स्हैर हाइफा जिणनैं वठै री लोकभासा में खाइफा बोलै, वैपारिक अर सामरिक दीठ सूं घणो महताऊ है।

जूनै जमानै में हाइफा माथै धुरी देस जरमनी अर तुरकी मिळ कब्जो कर लीधो। लूंठा जिणरै सिर ऊपर मारग। फिलिस्तीन कनै सांवठी सेना नीं। करै तो करै कांई! लड़ाई में पूरै पड़ै नीं। धुरी देस वाळां जरामन अर तुरकां हाइफा रै कोट माथै सांगोपांग मोरचा बणाया अर तोपां, गोळा-बारूद, लाइट मसीनगनां आद रो सांवठो जाब्तो कर राख्यो।

ठिकाणो :
पनराजपुरा रणधा
जिला-जैसलमेर
राजस्थान
मो. 9413306889

पैलै विश्वजुध री बगत भारत माथै अंगरेजां रो राज। फिलिस्तीन जरमन अर तुरकां री गुलामी सूं मगती सारू मित्र देसां सूं मदत मांगी, पण औ बीड़ो भारत वाळा भुरजाळां टाळ झेलै कुण! औ घणो मुस्किल काम ब्रिटिस सरकार जोधपुर रेजिमेंट नैं भोळायो। उण टेम जोधपुर में लेफ्टिनेंट जनरल सर प्रतापसिंह रा पत्थर तिरता। च्यारूंमेर जोधपुर रेजिमेंट री राठौड़ी सेना रो दबदबो कायम। सर प्रतापसिंह रै हुकम मुजब जोधपुर रेजिमेंट री सेना वीर बहादुर मेजर दलपतसिंह शेखावत री अगवाणी में फिलिस्तीन री दिस कूच कीधो।

अठै म्हैं आपनैं भारत माता रै सपूत अणमोड़ जोधार, बंकड़ै वीर, ओजस्वी अर अदम्य साहसी, मारवाड़ रै लूंठै सेनानायक मेजर दलपतसिंह शेखावत री थोड़ी-सी ओळखाण देवणी चावूं। मेजर दलपतसिंह पाली जिलै रै देवळी पाबूजी गांव रा जागीरदार रावणा राजपूत ठाकुर हरिसिंह शेखावत (हरजीसिंह) रा अेकाअेक सपूत हा। ठाकुर हरजीसिंह जी रैयत रा रुखाळा, बोली रा मीठा, जगचावा सपूत, गरीबां रा वाहरू अर जोधपुर हिज हाईनेस रा खास मरजीदान। औ गांव आज ई देवळी हरजी रै नाम सूं जाणीजै। दरबार सा अर ठाकुर हरजीसिंह जी रै आपस में मेळ घणो। ठाकुर हरजीसिंह जी जोधपुर दरबार री पोलो टीम में हरावळ (फ्रंट लाइन) रा खिलाड़ी हा।

जोधपुर हिज हाईनेस बाळक दलपतसिंह री वीरता, चपलता, घुड़सवारी, तलवारबाजी अर अणूती अकल विद्या देख विलायती पढाई करवा सारू ब्रिटेन भेज दीधो। पढाई, खेल अर घुड़सवारी में सबसूं उमदा कळा दिखावण वाळै वीर दलपतसिंह रो फगत 18 बरस री उमर में जोधपुर लांसर में घुड़सवार अफसर रेंक रै रूप में चयन होयग्यो। देसभगती रो उफणतो जज्बो ले रांगड़ शेर दलपतसिंह शेखावत सेना में भरती हुयो अर बहादरी अर टकाटक ड्यूटी रै परियाण फटाफट परमोसन मिलता गया अर सेना में मेजर रो ओहदो संभाळ्यो।

ब्रिटिस सरकार विचार कीधो कै जे हाइफा स्हैर नीं जीत्यो तो सगळो फिलिस्तीन धुरी देसां रै पगां हेठै आ जावैलो अर सिरफिरा धुरी देस सगळां देसां नैं दुख देवैला। मेजर दलपतसिंह शेखावत अर कैप्टन अमानसिंह जोधा री अगवाणी में 5 हजार घुड़सवार रणबांकुरां री फौज तलवार, भाला अर थ्री नोट थ्री बंदूकां सूं लैस होय हाइफा स्हैर माथै चढाई करबा कूच कीधो। घोड़ां रै पौड़ां अर सूरां रै जैकारां सूं धरती धूजण लागी।

भारत री सेना रा 900 भाला अर तलवार धारी जोधार फिलिस्तीनी सेना रै 5000 ऑटोमैटिक बंदूकां, मसीनगनां अर तोपां वाळै सिपाहियां सूं टक्कर लेवण कूच कीधो। जद अंगरेजां नैं ठाह पड़ी कै हाइफा वाळी तुरक सेना कनै बंदूकां, मसीनगनां अर तोपां है तो भालां-तलवारां वाळी जोधपुर राजपूताना सेना नैं पाछी हटवा रो हुकम दीधो। जद हुकम रो कागद मेजर दलपतसिंह कनै पूग्यो तो दलपतसिंह पड्डूत्तर लिख्यो, ''राजपूत फगत आगै बधणो सीख्यो है। पाछो हटणो राजपूत री जलमपत्री में ई नीं लिख्यो है। आज जे म्हैं पाछो हटूं तो म्हारो शेखावत कुळ लाजै अर मां रो दूध लाजै। राजपूत रो धरम

है विजय कै वीरगति। सूरवीरां री जीयाजूण में अैड़ा मौका कदै-कदैई आया करै। म्हे तो लड़ांला अर जीत रो डंको बजावांला।''

मेजर दलपतसिंह आपरी सेना रै रणबंका नैं वाकारया अर 23 सितंबर, 1918 रै दिहाड़ै हाइफा स्हैर माथै हमलो कर दीधो। तुरक सेना रा सिपाही बंकर बणाय छिपग्या अर वठै सूं फायर करै। अगन रा गोळा उगळती तोपां अर मसीनगनां साम्हीं भारत वाळा भुरजाळा भिड़ग्या अर अैड़ो रीठक मचायो कै जरमन अर तुरक चितबगना होयग्या। हिंद सेना रै सूरमां आपरी छाती भिड़ाय तोपां रा मुख फोर दीधा। भूखा सिंह अैड़ा झपटिया कै तुरक सेना रो कचरघाण काढ दीधो। मेजर दलपतसिंह शेखावत सागै केई अलबेला जोधारां तुरक सेना रै तोपखाना माथै कब्जो कर दीधो। मसीनगनां चलावणियां नैं मार कारतूस अर गोळा-बारूद लूट लीधा। जरमनी अर तुरकी री 5 हजार नफरी वाळी लूंठी सेना नैं हराय मार भगाई अर हाइफा स्हैर माथै विजय रो झंडो फहरायो। संसार रै इतिहास में औ पैलो जुध गिणीजै जिणमें तलवारां अर भालां वाळी सेना नवी तकनीक मसीनगनां वाळी 5000 सांवठी सेना नैं हराय जीत री जसपताका फहराई।

मेजर दलपतसिंह शेखावत रै हरावळपणै मांय राजपूताना राठौड़ी सेना री जबरी जीत हुयी अर हाइफा स्हैर नैं 400 बरस जूनी ऑटोमन साम्राज्य री गुलामी सूं आजादी मिली। इण जुध रै मांय 25 जरमन अफसर, 35 तुरक ऑटोमन अफसर समेत 1350 सिपाहियां नैं बंदी बणाय दीधा अर दुसमी तोपखानां सूं 17 मोटी तोपां अर केई मसीनगनां लूट कब्जै कीधी।

इण अैतिहासिक अर साहसिक जुध में जोधपुर सेना रा 8 सूरमा सहीद हुया, 34 वीर घायल हुया अर सामीभगत समरांगण साथी 60 घोड़ा पण काम आया। मेजर दलपतसिंह रा चचेरा भाई सीतासिंह शेखावत समेत घणा सूरवीर सहीद हुया। आं सगळां मां भारती रै जांबाज सपूतां रा सोनीलै आखरां में नाम उकेरती पाखाण पूतळियां आज ई इजराईल देस रै हाइफा स्हैर में ऊभी जसगाण कर रैयी है।

सेनाप्रमुख मेजर दलपतसिंह शेखावत इण जुध में घणा जख्मी होयग्या हा। बंदूकां री गोळियां सूं सूरवीर शेखावत रो सरीर जगै-जगै सूं छारणी होयग्यो पण रांगड़ रणबांकुरो हीमत नीं हारी अर आपरै सरीर सूं गोळियां निकाळतो रैयो। अंगरेजां रा मोटा अफसर मौकै माथै आयग्या अर घायल वीर दलपतसिंह जी नैं इलाज सारू अेक पाणी रै जहाज सूं लंदन रै मोटै सफाखानै सारू लेय रवाना होयग्या, पण रजपूती खून री नदी बहती गई अर बीच मारग भारत रै सपूत, महाभड़ जोधार, सेना नायक शेखावत रो हंसलो सुरग सिधाय मां भारती अर राजस्थान रो नाम अमर करग्यो। काहिरा मिस्र री धरती धन होयगी जठै अमर सहीद मेजर दलपतसिंह शेखावत रो छेहलो संस्कार हुयो। अठै अेक हंसतो-खिलतो बगीचो है अर उण बगीचै में मेजर दलपतसिंह शेखावत री अेक मूरत लगायोड़ी है जिणरै नीचै लिख्यो है—हाइफा हीरो मेजर दलपतसिंह शेखावत।

अमर सहीद मेजर दलपतसिंह शेखावत 'हाइफा हीरो' री पदवी सूं आखै जगत में ख्यातनाम होयग्या। गीरबैजोग बात आ है कै आज विदेसी धरती इजराईल रै स्कूली पाठ्यक्रम में 'हाइफा हीरो' नाम सूं पाठ चालै। इजराईल रो हर टाबर हाइफा रै हीरो नैं जाणै। अफसोस री बात आ है कै अपणै देस अर राजस्थान रा टाबर तानाशाह राजा हिटलर नैं तो जाणै पण दूजै देस री धरती माथै राजस्थान अर भारत रो नाक राखण वाळै इण सूरवीर नैं नीं जाणै।

भारत री सेना सहीद मेजर दलपतसिंह शेखावत नैं मिल्टरी क्रॉस अर इंडियन ऑर्डर ऑफ मैरिट सूं नवाज्या। मेजर शेरसिंह, जोधपुर लांसर सवार सुल्तानसिंह, सवार गोपालसिंह, सवार शहजादसिंह नै मिल्टरी क्रॉस सूं कोड कर मान वधायो। कैप्टन अमानसिंह नैं इंडियन ऑर्डर ऑफ मैरिट अर ऑर्डर ऑफ ब्रिटिस अंपायर रो खिताब देय घणो मान कीधो। दफादार जोरसिंह नैं इंडियन ऑर्डर ऑफ मैरिट रो मान देय कुरब बधायो। बहादरी सूं रणखेत में सांवठी जुधकळा सारू कैप्टन अनूपसिंह अर लेफ्टिनेंट सगतसिंह नैं मिल्टरी क्रॉस सूं नवाज्या। जोधपुर विश्वविद्यालय इंजीनियरिंग कॉलेज कनै ठाकुर हरजीसिंह रै बंगला 'देवळी हाऊस' में जद शहीद मेजर दलपतसिंह शेखावत री माताजी नैं आपरै वीर बेटा री शहादत री खबर लागी तो वीरांगना मां री छाती सूं दूध री बत्तीस धारां निकळी अर कवि री उकती सारथक हुयी :

सुत मरियो हित देस रै, हरख्यो बंधु समाज।
मां नंह हरखी जलम दे उतरी हरखी आज।।

वीरांगना मां वठै आपरै दूध उजाळणियै काळजै रै टुकड़ै रो थान थपाय दीधो, जको आज वीर भोमिया जी रै नाम सूं परचा देवै। लोग आज ई वठै नारैळ चढावै।

भारत रा वीर सपूत री आ गौरव गाथा बाड़मेर जिलै रा गौरव, समाजसेवी युवा शिक्षाविद् अर सांवठा कलमकार गौरवराजसिंह राजपुरोहित जुड़िया हाल बाड़मेर म्हनैं वीडियो कॉल सूं सुणाई। गौरवराज सिंह जी जून 2018 में अंतरराष्ट्रीय कानून री पढाई करवा इजराइल पधारया हा जणै अै सगळा सबूत जुटाया अर 'हाइफा हीरो' ऊपर अेक शोध पण कीधो। 23 सितंबर, सन् 2018 में हाइफा विजय री सताब्दी रै टाणै श्री रावणा राजपूत समाज रो जयपुर में अेक जोरदार जळसो हुयो जिणमें हाइफा हीरो शहीद दलपतसिंह शेखावत रै चित्र माथै हजारां लोगां आपरी सरधांजळी रा फूल चढाया। गौरवराज सिंह राजपुरोहित आपरै मीत इजराईल सरकार में विदेस उपमंत्री मिखाल रौनेन नैं बतौर खास मैमान रूप में इण जळसै में तैड़ै लाया। हाइफा हीरो री मातभोम देख मिखाल रौनेन जी घणा राजी हुया अर भारत देस रो आभार मान्यो।

❖❖

 ISSN : 2320-0995

गिरधरदान रतनू दासोड़ी

राज चढो तो राखजो...

बात बां दिनां री है जद आपां रै अठै राज राजावां रो हो। राजावां रै हेठै ठाकर हा।

अेकर चौमासै री वेळा ही। खेतां में बूंठाळी बाजरियां काळी नागणियां ज्यूं वळाका खावै ही। बेलड़्यां नाळा पसारियां बधती ई जावै ही। चोकड़ियै मोठां सूं खेत मूंगाछम दीसै हा। अैड़ै में किणी अेक ठाकर साब रै खेत में पाड़ोसी गांव रै कुंभार रो गधो हिलग्यो। धाप'र खावै अर बाकी रो गधलेटां कर-कर'र खेत मिटावै। ठाकरां रै खेत कुण जावै? उठै तो अल्ला री मां रो चाळीसो वाळी बात ही। छतापण अेक पाड़ोसी देख्यो कै आपां गुढै बैठां हां! रावळै खेत नैं गधो मिटावै अर आपां रै आंख नीचै ई नीं आवै! राम नीं करै जे जोग सूं कदैई ठाकर साब अठीनै पधारग्या तो म्हारै घर री काळी कर देवैला तो क्यूं नीं ठाकरां नैं जाय'र अरज कर दूं। आपां नैं ओळभो नीं रैवै। पछै गिरै जाणै अर गिरै री बलाय जाणै।

पाड़ोसी जाय'र सारी हकीकत ठाकरां नैं कैय सुणायी। सुणतां पाण ठाकर दो-तीन हाजरियां नैं नठाया अर गधो पकड़ाय रावळै बाड़ै में काबू करग्यो।

आ बात जद कुंभार नैं ठाह लागी तो उणरो डरतै रो पेट छूटग्यो। उणरी हिम्मत ई नीं हुयी कै रावळै कानी पग मेलै। हालांकि इत्तो डरपोक कुंभार ई नीं हो। उणरै अर उणरी घर-धणियाणी रै आपस में बात खंचियां उण केई वळा गधियै रा कान ताणिया अर पूंछ मरोड़ियो पण हमकै उणरी शेखी जबाब देयगी।

ठिकाणो :
मानद अध्यक्ष,
राजस्थानी प्राचीन साहित्य संग्रह संस्थान,
दासोड़ी (कोलायत)
बीकानेर (राज.)
मो. 9982032642

आखिर उण हिम्मत कर'र आपरै गांव रा बारठजी बा नैं पूरी गधा-गाथा मांड'र बताई तो साथै ई मदत कर'र ठाकरां सूं गधो पाछो दिरावण अर कूट सूं बचावण री अरज करी। बारठजी कैयो, ''जा रे गैला! ठाकर थारै खर रो कांई करै? इयां ई हाजरिया बांध दियो होसी। जा लिया।''

जणै कुंभार कैयो ''हुकम, म्हारै गधै रावळै खेत नैं खाधो कम अर चूंथियो घणो। गधै नैं ठाह नीं हो कै औ रावळो खेत है। ठाकर साब म्हारी टाट घड़ देवैला, सो आप बात नैं हळकै में मत लेवो अर म्हारी सहायता करावो।''

जणै बारठजी बा उणनैं अेक पुरजियै माथै अेक दूहो लिख'र दियो अर कैयो, ''जा सीधो, हाथ जोड़'र ठाकरां नैं पकड़ाय दीजै।''

दूहो हो :

गधो कवि रै कुंभार रो, लियो राज कां घेर।
राज चढो तो राखजो, नीतर दीजो फेर।।

ठाकरां दूहो पढतां ई हाजरियां नैं कैयो कै इणरो गधेड़ियो छोड दियो जावै।

दीनानाथ दयाह

भेळा बैठां तो बासण ई खड़बड़ै सो मिनख तो खड़बड़णा ई है। अैड़ी ई खड़बड़ीजण री मसकरी है कूंपड़ावास री। कूंपड़ावास जिणनैं भाई-सैण नगरी रै नाम सूं ई बतळावै अर प्रगाळ रा भूखा हुवै तो नाम लेवण में थोड़ो संको ई करै! संको क्यूं करै? आ बात अठै नीं लिखूं, क्यूंकै साच ई प्रिय बोलणो चाईजै, अप्रिय साच नीं बोलणो। इण गांव में दो भाई हा। नाम लिखणा ठीक नीं। पाठक आपै ई समझ जावैला। दोनूं ई नामजादीक अर कवेसर। पण जोग अैड़ो बणियो कै आपसरी में तणगी। तणी तो अैड़ी तणी कै दोनूं कचेड़ी चढग्या। मुकदमो लंबो चालियो। उठै जज दीनानाथ नाम रा कोई सैण हा, जिकै कवि भी हा। जणै मोटोड़ै भाई दीनानाथ अर्थात भगवान नैं संबोधित कर'र जज साब नैं आपरी स्थिति दरसाई :

पगरखी फाटी परी, गाभा फाट गयाह।
अजूं न करी मो ऊपरै, दीनानाथ दयाह।।

औ दूहो सुणतां ई छोटोड़ो भाई सावचेत हुयो अर सोच्यो कै दूहो सुण'र कठैई जज साब पसीज नीं जावै! जणै उणां आपरै भाभै रा असल लखण बतावतां दीनानाथजी नैं सुणायो :

दीसत दीसै दूबळा, कइ कइ जुलम कियाह।
इसड़ां पर मत आंणजै, तूं दीनानाथ दयाह।।

जज साब गताघम में पजग्या कै कांई निरणै करणो चाईजै ?

मत दीजो को धीवड़ी

महेवा री धरा में अेक गांव बागूंडी। गांव री बसावट अैड़ी कै गांव ऊंचाण में बस्योड़ो पण पाणी री व्यवस्था ठीक इणरै उलटी। अेकर कोई दूजै गांव रा बाजीसा उठीकर निकळै हा कै उणां देख्यो कै अेक बहुआरी पाणी रो घड़ो उखणियां साम्हीं चाढ दोरी-दोरी चढै ही, क्यूंकै माथै ऊपर भर्‌योड़ो घड़ो, साम्हीं अेकदम हियाचढ धड़ो (धोरो) तिण ऊपर बापड़ी पेटसूंणी। बहुआरी री आ करुण दसा देख'र बाजीसा रो काळजो पसीजग्यो अर उणां अेक दूहो कैयो :

सिर घड़ो साम्हीं धड़ो, पेट ज पूरै मास।
मत दीजो को धीवड़ी, बागूंडी रै बास।।

आं बाजीसा तो माईतां नैं खाली ओपती भोळावण देय'र छोड दिया, पण अेक दूजा बाजीसा चूरू रै गांव बूचावास कनैकर निकळै हा जणै उणां नैं याद आयगी कै अठै आपां रै फलाणसिंह ठाकरां री बाई परणायोड़ी है तो क्यूं नीं बाई सूं मिलतो हालूं। समाचार लेय ई लूं लो अर देय ई दूं लो। ता ऊपर बाई म्हारै ई लाडकी ही सो 'बा' नैं देख'र कित्ती राजी होसी! राजी हुणी ई है क्यूंकै पीहर रा रूंख ई रळियावणा लागै, पछै म्हनैं देख्यां तो बाई कितरी राजी हुसी कै पूछो मत। आ सोच'र बाजीसा बूचावास कानी टुरग्या।

ज्यूं ई बाजीसा बूचावास रै धोरै चढ'र गवाड़ में पूग्या तो देख्यो कै गांव रा मिनख तो पीपळ री छियां में चौपड़ अर चरभर रमै हा अर गांव री बहू-बेटियां रो अेक झूलरो पाणी लावै हो।

उणां देख्यो कै ठाकरां री उवा बाई जिणनैं ठाकर अर गांव री परगै हथाळी रै छालै ज्यूं राखती, वा बीकानेरियो घड़ो उखणियां दोरी-दोरी बैवै ही। दोरी बैवणी ईज ही, क्यूंकै सागी बागूंडी वाळी ईज स्थिति अठै ही। उवा ई पेटसूंणी ही अर उठै ई गांव चढाण में बस्योड़ो।

बाई नैं पाणी लावतां अर धोरै चढतां देख'र बाजीसा नैं रीस आयगी अर उणां गवाड़ में बैठै मूंछाळां नैं सुणायो :

सांमा टीबो सिर घड़ो, कामण पूरै मास।
नारी सींचै नर पीवै, (तन्नैं) बाळूं बूचावास।।

गुर बैठा जीमै गधा

दासोड़ी गांव में शभजी जोशी हुया। डिंगळ रा सिरै कवि हा। आज ई उणां री रचना लोकजिह्वा माथै अवस्थित है। फळोदी री अधिष्ठात्री देवी लटियाळ रो छंद, म्हैं बाळपण में म्हारै जीसा (दादोसा गणेशदानजी रतनू) सूं सुणतो :

जय जय लटियाळक, विरद उजाळक, रास दयाळक मात रमै।

इणां रा भाई अन्नारामजी जोशी वीतरागी हा। रामस्नेही बणग्या अर दासोड़ी रामद्वारै रा महंत हा। आं अन्नारामाजी रा ई दत्तक शिष्य हा रामसुखदासजी महाराज। इणी सारू स्वामीजी दासोड़ी नैं पीहर कैवता। इतरै बडै त्यागी पुरुस रो दासोड़ी पेटै लगाव जगजाहिर हो। खैर...

अन्नारामजी अेक बार भंडारो करयो अर आपरी जमात यानी रामस्नेहियां नैं तेड़'र जीमाया। जद आ बात शभजी नैं ठाह लागी तो अै रामद्वारै गया अर देख्यो कै जीमणवार हुवै हो। उणां नैं उठै साधुवां में किणी जात विसेस रा साधू घणा निगै आया जणै अन्नारामजी महाराज नैं ओळभो देंवता बोल्या :

आपै कीजै कामड़ा, देवां किणनैं दोस।
गुर बैठा जीमै गधा, औ ई बडो अफसोस।।
अन्नाराम तो अकल रो, देवां किणनैं दोस।
माल मिटावै मसकरा, औ ई बडो अफसोस।।

अन्नारामजी रा काकाई भाई किसनदासजी। विद्वान आदमी हा, पण इणां रा बेटा अेक मुलतानचंदजी नैं छोड'र बाकी सगळा ठठै मींडी ठोठ तो हा ई, लखणां रा लाडा ई हा। अेक दिन किसनदासजी आपरै छोरां माथै हाका करै हा। शभजी सुणियो तो बोल्या :

गंगाविशन तो गधै चढै, पाडै चढै पैळाद।
क्यां किसना कारा करै, बिगड़ गई औलाद।।

शभजी री विद्वता री चरचा आज ई चौपाळ में चालती रैवै।

❖❖

 ISSN : 2320-0995

डॉ. रेणुका व्यास 'नीलम'

धरती रै सुरग री झलमल करती झील

जिनगाणी रै खजाने में सुनैरी स्मृतियां रो होवणो भोत जरूरी है। अै स्मृतियां अबखै बगत मांय मिनख री सैं सूं बडी ताकत हुवै। जिनगाणी रै जथारथ सूं बाथेड़ा लेवतो मिनख, जद सुनैरी स्मृतियां री आंगळी थाम'र बीत्योड़ै बगत री गळियां मांय चक्कर लगावै तो उण रो मन नूंवो–नकोर हुय जावै। जिनगाणी मांय नूंवां रंग घुळ जावै अर तरो–ताजा हुयोड़ो मिनख जिनगी सूं दो–दो हाथ करण नै फेरूं त्यार हुय जावै।

म्हारी श्रीनगर जातरा री स्मृतियां म्हारै वास्तै बो अनमोल खजानो है, जको म्हनैं जीवण री ताकत दैवै। कुदरत रो आदर करणो सिखावै अर आपां रै देस री समरध सांस्कृतिक परंपरा सूं भी म्हनैं जोड़ै।

जद 6 जून नैं म्हे जम्मू स्हैर सूं श्रीनगर वास्तै, प्राइवेट गाडी मांय, सड़क मारग सूं टुरिया, बीं बगत झिरमिर–झिरमिर मेह बरसै हो। मरुदेस में मेह रो सुगन तगड़ो सुगन गिणीजै। अठै मेह भूल्यो–भटक्यो ई आवै अर जद भी आवै, पावणै ज्यूं सनमान पावै। मेह री मैमानी में तो म्हे खुसी सूं गैला हुय जावां। म्हारै जीवण मांय मेह उछब अर उमंग लावै। म्हारा तो तीज–तैंवार,मेळा–मगरिया, मेह री साखी में ई मनीजै।

म्हारी टोळी मांय कुल बारह जणा हा—छउ टाबर अर छउ बडा। टाबरिया राजी होवता, गीत गावता, हंसी–ठिठोळी करता अर गाडी मांय बैठा–बैठा बिरखा री बूंदां सूं खेलता हा। म्हे बडा तो जाणै, मौसम रै जादू सूं मंतरीज्योड़ा अबोला हुय रैया हा। म्हैं खुदोखुद नैं कैयो, ''देखो, बगत रो फेर! रेतीले धोरां रा वासी, आज मेह रै घरै पांवणा है।''

ठिकाणो :
'श्रीकृष्णम्'
सीताराम द्वार रै मांय
बीकानेर (राज.)
मो. 9414035688

आभै मांय दूर-दूर तांई सैंठी काळी कलायण मंड्योड़ी ही। लागे हो जाणै कोई हळफळी लुगाई आभै रै आंगणै में भूल सूं गोबर री जग्यां, राख रो लेपो लगाय दियो हुवै। कै कोई चतर रसोयण आभै री सिल माथै पोदीणै री चटणी पीस'र उणमें नींबू री सागीड़ी खटाई देयी हुवै।

चढाई सरू होवतै ई मारग संकड़ो होवणो सरू होयग्यो। अेकै कानी जबरा पहाड़ अर दूजै खानी ऊंडी खाई। मारग रै लगोलग बैवती खाई मांय, अेक झक्क धोळै पाणी री नदी खळखळ बैवै ही। ऊपर सूं देख्यां लागै हो जाणै कोई धोळी नागण लैरावती-बळ खावती सर-सर चालती हुवै। खाई इत्ती ऊंडी कै जे ड्राईवर, घड़ी अेक नै ई चूक जावै तो सगळां रो 'राम नाम सत्त' बठै ई हुय जावै। किणी रो नांव अर पतो ढूंढ्यां ई नीं मिलै।

आखो दिन मारग में ई कटग्यो। दिन में परकत रा जिका चितराम मन मोवै हा, रात पड़तां ई, बै मन मांय भै उपजावण लागग्या। घणघोर अंधारो, साव सूनो मारग, खाई रो डर, किसारियां सागै दूजै जंगळी जीव-जिनावरां री आवाजां, पाणी री खळखळ अर सरणाटै रो सोर काळजै मांय धूजणी छुटावै हो। फेर अंधारे रै मांय जंगळी जीव-जिनावरां रै मारग बिचाळै अचाणचक आ जावण रो खतरो न्यारो! म्हे सगळा रामजी-रामजी करता चेतन हुयोड़ा बैठ्या हा। कोई हिम्मत रो हेडाऊ ई ऊभ सकै बीं अणजाण मारग रै काळैकुट्ट अंधारै अर सरणाटै मांय। छोटै-मोटै मिनख री तो बस री बात ई कोनी।

मारग मांय कठैई संकड़ाई ही तो कठैई पहाड़ बिरखा सूं खिंड'र रास्तो रोकै हा। दस घंटां रो सफर, म्हे सोळै घंटां मांय पूरो करियो।। रात नैं जद दो बजी श्रीनगर पूग्या तो सूनी सड़कां पर भै लाग्यो, पण सेना रै जवानां री मौजूदगी ठावस देवै ही। होटल पैलां सूं ई आरक्षित ही। सीधा बठै ई पूग्या। जरूरी कारवाई पूरी करयां पछै, ठंड सूं खड़खड़ीज्योड़ा अर थाकैला सूं अधगावळा म्हे सीधा गुदगुदा अर निवाया बिस्तरां मांय बड़ग्या।

दिनूगै जद जाग हुयी तो थकान रो नांव-निसाण ई नीं हो। नींद री जादूगरणी आपरै जादूं री आंगळ्यां सूं सगळां री थकान हर लीनी ही।

होटल नैं देखतां ई जी हरो हुयग्यो। पांच मंजलो होटल काठ सूं बण्योड़ो हो। फर्नीचर अर जाळी-झरोखा काठ री कोरणी रा मनमोवणा नमूना हा। होवै ई क्यूं नीं? परकत चीड़ अर देवदार रा घणा जंगळ इण पहाड़ां नैं ईज तो बख्स्या है।

म्हारी श्रीनगर दरसण जातरा रो पैलो पड़ाव बण्यो, 'शंकराचार्य मिंदर'। ग्यारह सौ फुट ऊंची 'तख्ते सुलेमानी' नांव री पहाड़ी माथै थरपीज्योड़ो औ 'शिव मिंदर' सांप्रदायिक सद्भाव री लूंठी मिसाल हो। कोई बारै सौ बरस पैली भारत भ्रमण वास्तै निकळ्योड़ा आदि शंकराचार्य अठै आपरा पगलिया मांड्या। साधना करी। जद सूं आ ठौड़ बांरै नांव सूं ई जाणीजै। मिंदर री सुरक्षा रो बंदोबस्त करड़ो हो। दो सौ पगोथिया चढ'र जद म्हे ऊपर पूग्या तो जी सोरो हुयग्यो। मिंदर रा दरसण कर्‌या अर थोड़ी ताळ आंख्यां मींच'र शंकराचार्य जी री साधना-गुफा मांय बैठ्या तो मन सांति सूं भरीजग्यो।

 ISSN : 2320-0995

शंकराचार्य मिंदर री ऊंचाई सूं श्रीनगर अेक कटोरै दांई लखावै। साची बात तो आ है, कै श्रीनगर अेक कटोरो ईज है—परकत री सुंदरताई रै इमरत सूं भर्‌योड़ो कटोरो! पहाड़-रूंख, नदी-झील, बादळ-बरफ, बाग-बगीचा जाणै इण कटोरै मांय जड़्योड़ा नगीना है। हरेक पर्यटक नैं श्रीनगर अेक सपाट मैदान-सो लखावै। पण इण मिंदर री ऊंचाई सूं दैख्यां पछै, पैली पोत बीं नैं ठाह पड़ै कै श्रीनगर तो अेक घाटी है। पीरपंजाल रै पहाड़ां सूं घिर्‌योड़ी घाटी! इण घाटी नैं चमन बणावै लाडली झेलम अर घाटी रा घणकरा झरणा।

झेलम! हां, शेषनाग झील सूं आवती झेलम! झमाझम बैवती झेलम! भारत रै इतियास री अेक मानीजती नायिका, संस्कृत री 'वितस्ता' अर कस्मीर वास्यां री 'व्यथ' झेलम! जगत जीतण री मन्स्या सूं लबोलब सिकंदर नैं खाली हाथ पलटावण आळी झेलम! पोरस री तलवार अर बोली मांय भारत भौम रै पुरसारथ री चमक देखावण वाळी झेलम! हरेक आक्रांता रो मारग रोकण वाळी झेलम!

आखै श्रीनगर नैं झेलम रो परताप कैयो जाय सकै। श्रीनगर नैं 'श्री' मतलब सुंदरता रो नगर झेलम ईज बणावै। बियां श्रीनगर समंदर तळ सूं 1730 मीटर ऊंचाई माथै बसै। ईसा रै जलम सूं 231 बरस पैला अेक हिन्दू राजा प्रवरसेन द्वितीय इणनैं बसायो हो। मध्यकाल रा मुगल केई बादसा इणनैं आपरी कलावंती निजरां सूं संवारियो।

उणी दिन दुपैरी में म्हे, 'चश्मेशाही बाग' पूग्या। कुदरती झरणा अर च्यारूंमेर रा पहाड़ इणरी सोभा नैं दूणी कांई चौगणी करै। रंग रंगीला न्यारा-न्यारा पुसब अर ऊंचा-ऊंचा रूंखड़ां सागै मखमली घास, अठै री बिसेस सोभा है। आभै मंड्योडा घोर स्यामबरणी बादळिया तो जियां म्हारै सागै-सागै ई कस्मीर घूमै हा। लागै हो जाणै आज तो अै बरस'र ई रैसी अर सागै बैवाय ले जासी सगळी घाटी नैं। अठै स्यामबरणी आभै नैं देख्यां पछै, पैली बार म्हनैं ठाह पड़ी कै स्यामबरण कित्तो गैरो, व्यापक अर तृप्ति सूं लबोलब हुवै अर भारत री संस्कृति श्रीराम अर श्रीकृष्ण जिसै ओतारां नै स्यामबरण रा क्यूं मानै।

श्रीनगर नैं जै आपां मस्जिदां रो स्हैर कैवां तो ई कीं बेजां बात कोनी। दुनिया भर में मानीजती 'हजरत बल दरगाह' अठै ई है। कैवै कै अठै पैगंबर मुहम्मद साहब रो बाल सुरक्षित राख्योड़ो है। मस्जिद रो संगमरमर रो गोळ गुंबद, दूर सूं ई पळका मारै। दूजी, देवदार रै ठूंठां माथै ऊभी जामा-मज्जिद इत्ती बडी है, कै इण मांय अेकै सागै तीस हजार लोग नमाज पढ सकै। सन 1623 रै बरस मांय मुगल बेगम नूरजहां री थरप्योड़ी पत्थर-मस्जिद भी देखणजोग है। दस्तगीर साहब अर मरदूम साहब आद भी अठै री नामी मस्जिदां गिणीजै।

श्रीनगर री असली सोभा तो डल सूं है। डल रै बिनां क्यांरो श्रीनगर! श्रीनगर रो नगीनो कैयीजै डल झील! फगत कैवण में ई नीं, देखण में भी नगीनो है डल झील! इंसान री कारीगरी अर परकत री नैमत है डल झील!

अठारै किलोमीटर मांय फैल्योड़ी डल झील श्रीनगर री सैं सूं घणी जाणीजती अर मानीजती झील है। तीन तरफ सूं पहाड़ां सूं घिरयोड़ी आ झील सिकारा अर हाउसबोटां रै कारणै घणी जाणीजै। सिकारा नांव री नावां अठै आवण-जावण रो, पर्यटन रो अर बिणज-ब्यौपार रो बडो साधन है। हाउसबोटां पर्यटकां नैं झील मांय ई रैवण-खावण-पीवण-सोवण री जेब मुजब सुविधा दैवै। झील मांय ई हाट बाजार लागै। सिकारा पर्यटकां नैं टापुवां माथै घुमावै, नौकायन करावै अर बांरो मनोरंजन करै।

आगलै दिन जद म्हे दिनूगै-दिनूगै झील पर पूग्या तो बठै साव सांति ही। धंवर सूं ढक्योड़ी झील इण ढब लागै ही, जाणै कोई राजकंवरी धूंवै री सिरख ओढ'र मस्ती मांय चित सूती है। ओळै-दोळै रा पहाड़ अर रूंख जाणै बीं री निगराणी करै हा। स्यामबरणी बादळियां जियां राजकंवरी रै मूंढै पर झुक्योड़ा, उणरी जाग री बाट जोवै हा।

पर्यटकां रै सोर-सराबै, स्हैर री चैळ-पैळ अर सूरज री किरणां री कुचरणी सूं कसमसावती डल, थोड़ी ताळ पछै, आप ई आंख्यां मसळती, धूंवै री सिरख नैं परियां न्हाख'र उठ बैठी होयी। सिकारा हालण-चालण लागग्या। दूर ऊभी हाउसबोटां निगै आवण लागगी। मुळकता सूरज बाप जी डल रै पाणी मांय आप री सोनै री कण्यां छिड़क दीनी अर डल झलमल करती मुळकण लागगी।

म्हे डल सूं सिंझ्यां मिलण रो वादो कर'र 'निशात बाग' कानी लंघग्या। मुगल बादसावां अर बांरै सामंतां रै बणायोड़ै बागां में निशात बाग री तो सोभा ई न्यारी है। औ बाग सड़क सूं थोड़ी ऊंचाई पर थरपीज्योड़ो है। धोळी मोड़ै माथै ई अेक झरणो आवणआळै री जोरदार मिजमानी करै। डल झील रै सामोसाम होवण सूं निशात बाग री सोभा सवाई हुय जावै। हरियाली सूं लदफद ओ बाग स्थापत्य रो भी स्यानदार नमूनो है। निशात बाग आठ चढता सोपानां में बण्योड़ो है। सैं सूं लारलै सोपान रै लारै तो जावरान री पहाड़्यां जियां बाग माथै छत्तरछायां करयोड़ी ऊभी है।

आगलै पासी डल, लारलै पासी पहाड़ अर बीचूंबीच निसात बाग री रंगरंगीली सोभा! देखणवाळो गैलो हुय जावै, कै किणनैं देखूं अर किणनैं नीं? सरपत रै झाड़ां सूं घिरयोड़ी डल रै बिचाळै चालता फव्वारा अर डल रै साफझक पाणी पर ढळतै सूरज री किरणां इयां लागै ही, जाणै डल री सिंदूरी ओढणी पर सूरज जी आपरी करनी सूं लांबी-लांबी सोनलिया पट्ट्यां कोर दी हुवै।

कश्मीर 'धरती रो सुरग' क्यूं कैवावै, म्हनैं आज समझ पड़ी। आ बात कैवण री नीं, मैसूस करण री है। खुद आपरी आंख्यां सूं देखण री है। निशात बाग मांय भांत-भांत रै दुरलभ पुसबां री क्यारियां, बीचूंबीच पाणी री नहर अर झरणा मन मोवै हा। लागै हो बस निरखता ई रैवो परकत नैं। इण बाग री थरपना बेगम नूरजहां रो भाई आसफ खान करी ही।

फेर म्हे पूग्या 'शालीमार बाग'। औ बाग मुगल बादशाह जहांगीर आपरी बेगम नूरजहां वास्तै बणवायो हो। साफ पाणी री नहर, घणकरा चीड़ रै रूंखां अर फुलवारियां रो अनोखा नमूनो है शालीमार। बाग मांय शाही रैवास वास्तै कक्ष भी चिणायोड़ा है। लारै ई लारै जनाना कक्ष अजै ई मौजूद है।

सिंझ्या नैं जद म्हे पाछा डल झील पूग्या तो बठै रो तो नजारो ई न्यारो हो। डल जाणै मूंढै बोलै ही। हंसै अर खिलखिलावै ही। सिकारै माय बैठ'र जद म्हे डल झील री सैर वास्तै रवाना हुया, बीं बगत सूरज बापजी आपरी पोटळी रो सिगळो सिंदूर डल रै पाणी माथै खिंडा'र आथूण कानी रवाना हुय चुक्या हा। बोळी ताळ तांई बांरा सिंदूरी पगलिया आभै मांय मंड्योड़ा रैया। सिंदूरी डल इतराती अर मुळकती रैयी। होळै-होळै बत्त्यां चसगी अर डल रो पाणी अेक अळगो ई झलमल करतो रूप धारण कर लियो।

हाउसबोटां नैं देख'र तो म्हे अचंभे मांय पड़ग्या। सगळी सुविधावां सूं लैस पाणी रै बिचाळै अै घर तो जाणै जळमहल ईज हा। हाउसबोटां में बैठ'र पल भर नै लाग्यो जाणै आपां ई कठै रा राजा-राणी हां। सैर करतां ठाह पड़ी कै डल रै पाणी में खेती भी हुवै अर माछळी पकड़ण रो ब्यौपार भी। कण-कण वासी भगवान जियां डल तो श्रीनगर में सगळी जग्यां फैल्योड़ी है। चुळबळी छोरी जियां आ, कठीनै सूं ई आय'र पर्यटक नैं थापी कर दैवै अर मुळकती-मचकती, बीं री निजरां रो हाथ थाम'र परकत रा मनोहर चितराम देखावण नै आपरै सागै लेय चालै।

डल में झेलम अर केई दूजां झरणां रो पाणी भी आवै। डल रा चार भाग है। कठैई डल गगरीबल अर लोकट डल तो कठैई बोड डल अर नगीन कैयीजै। लोकट अर बोड मांय तो रूपा अर सोना नांव रा दो टापू भळै पर्यटकां रो मन मोवै। नगीन झील रो पाणी देखण में अेकदम लीलोछम लागै। अठै पर्यटकां वास्तै तैराकी अर वाटर स्कीइंग जिसा रोमांचक खेल भी हुवै।

श्रीनगर स्हैर देखण में, भारत रै दूजै स्हैरां जिसो चैळ-पैळ अर जीवण सूं भर्योड़ो लागै। हर चीज-बस्त सूं भर्योडी ऊंची-ऊंची दुकानां, ठौड़-ठौड़ माथै बैंकां, स्यानदार इमारतां अर काठ री होटलां, इणनैं अेक बडो स्हैर बणावै। जद म्हे स्कूल जावणआळै टाबरां सूं भर्योड़ी बसां सड़कां माथै दौड़ती देखी तो मन नैं अणथाग सकून मैसूस हुयो। सोच्यो—चालो अै कोरै कागज जिसा टाबरिया किताबां रो ग्यान लैसी तो जीवण में मारग नीं भटकसी। चोखी किताबां तो सगळां नैं ई मिनखाचारो सिखावै अर हरमेस हिंसा अर नफरत रै आडी सोवै। किताबां ई तो मिनख नैं मिनख बणावै।

❖❖

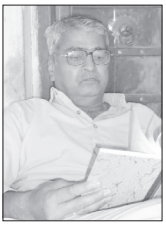

डॉ. तेजसिंह जोधा

अपणायत अर भेळप रा भळहळता भाव : अंतस री आवाज

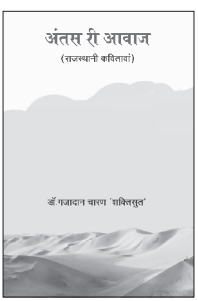

'अंतस री आवाज' डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत' री राजस्थानी कवितावां री नवी कविता-पोथी। पारंपरिक छंदां रै अनुशासन में कवितावां आपरो रूप लेवै। शक्तिसुत री कवितावां में संवेदनां री विविधता अर आधुनिकता अनै पुरातनता रो रळियावणो रूप निगै आवै। अै कवितावां विसयां री विविधता नैं अंगेजै। आज रै आदमी नैं देस अर समाज रै गीरबैजोग इतिहास सूं जोड़ै। राजस्थान रो इतिहास जाणै कवितावां में मूंडै बोलै। वाह पदमण बडभागी, नमन धरा नागौर अर चित्तौड़ दुर्ग जिसी कवितावां इणरी साख भरै। कवि री कवितावां रो फलक घणो विस्तार लियोड़ो। गांव-गळी सूं लेय राष्ट्र अर उणसूं आगै आखै संसार अर मिनखाचार री महिमा बखाणती अै महताऊ कवितावां कवि शक्तिसुत री अध्ययनशीलता, संवदेना री गहराई अर ऊंडी अनुभव दीठ री साख भरै। कवि जठै 'आजादी री इज्जत' सिरैनाम वाळी कविता में राजस्थान रै सूरमावां री शौर्य-गाथावां अर स्वाभिमान री अमर अभिव्यक्ति करतां हिंदुस्तान री आजादी में राजस्थान वासियां रै अवदान नैं उजागर करै बठै ई भारत रै गौरवमय अतीत नैं वाणी देवै। कवि आपणी सांवठी सांस्कृतिक परंपरा रा वारणां लेवै पण आज रै समाज री ऊंधी मनगत रै कुप्रभावां नैं देख चिंतित होवै :

संस्कृति री नदियां बहती ही, सगळां नैं नेह लुटाती ही
मरजाद सिखाती जन-मन नैं, सागर सूं मिलबा जाती ही
उणरै भी लूंका लार लग्या, आ देख द्रगां में है पाणी
गंदै नाळां सूं घिर बैठी, वा आज सिंधु री पटराणी

आज रै समाज अर मिनख रै चाल-चलण माथै ई कवि री पैनी निजर। आज रै मिनख रै व्यवहार नैं देख कवि नैं घणी रीस आवै कै आज नीं तो माता-पिता अर बडा-बूढा रो आदर है

ठिकाणो :
गांव-पोस्ट : रणसीसर जोधान
तहसील : डीडवाना
जिला-नागौर (राज.)
मो. 9460164609

 ISSN : 2320-0995

अर नीं वांरी चिंता। इसा कपूतां नैं देख कवि कैवै कै आंरी कीरत में 'म्हैं गीत लिखूं या गाळ लिखूं' :

बळबळती आग जियां बोलै, खोलै जद मुख सूं झड़ै खोट
बतळायां बाथ्यां पड़ जावै, साम्योड़ा राखै सबद-सोट
अै मात-पिता नैं यूं मानै, ज्यूं कीट मकोड़ी है कोई
आयोड़ी आफत आकाशी, फूट्योड़ी कोडी है कोई
बूढोड़ी बेबस आंख्यां री, लाचारी देख्यां हियो भरै
आ अेक आध री बात नहीं, है गाम-गाम अर घरै-घरै
बरताव इसो विकराळ देख, म्हैं रीझ लिखूं या झाळ लिखूं
कीरत में इसै कपूतां री, म्हैं गीत लिखूं या गाळ लिखूं।।

कवि री आ चिंता आंतरिक संवेदना री सबळाई रो सबूत पण शक्तिसुत री कवितावां में निरासा अर क्षोभ ई नीं आसा अर उम्मीद भी घणी, जियां 'जोगां री जोगाई' कविता में कवि भारतीय समाज री कृतज्ञता अर गुणग्राहकता री पिछाण करावतां लिखै :

जोगा मिनखां नैं आ जगती, पीढ्यां पलकां पर राखै है
कोई पण बात बिसारै नीं, हर बात चितारै भाखै है
कुण कह्वै जगती गुण भूलै, कुण कह्वै साच नसावै है
जोगां री जोगी बातां रा, जग पग-पग ढोल घुरावै है।

अेक दूजी कविता 'विचार अर संसार' में कवि सोच बदळतां सितारा बदळण री हामी भरतो कुंभकार अर माटी रै द्रष्टांत सूं नवी पीढ़ी नैं चिंतन री नवी दीठ देवतां आपरै जीवण री दसा-दिसा बदळण रो आह्वान करै :

जिण गत कुंभकार मन बदळ्यो, उण गत बदळ्यां आपां
सोच बदळ संसार बदळद्यां, नव-नव मजलां नापां

कवि भारत नैं संभाळण वास्तै मोट्यारां नैं बकारै, वांरी खिमता अर खासियतां रो खुलासो करै, रुळपट रासै सूं पासै रैवण अर साच कैवण री अरदास करै, भलपण री साख भरतां बदपण नैं अळगो बाळण री हूंस भरै, मातभोम रो करज उतारण सारू साचकलो फरज याद दिरावै :

जितरी ही जिणरी खिमता है, उण मुजब आज सूं काम करो
रुळपट रासां नैं रेत रळा, तोतक रो काम तमाम करो
भलपण री साख भरां आपां, बदपण नैं अळगो बाळांला
आओ मोट्यारां मिल आपां, भारत नैं आज संभाळांला

कवि माता नैं विधाता रै सम रूप मानै। बडा-बूढां नैं आदर देवण री बात करै। बूढा-बडेरां रा गुण बखाणै। 'बूढा घर री साख हुवै' कविता में 'शक्तिसुत' कैवै :

बूढां रो अपमान कर्‌यां सूं मिनख जमारो खाख हुवै
बूढा थारी-म्हारी सोभा, बूढा घर री साख हुवै

बूढा अनुभव समद अपारा, ज्ञान-गंग री धारा है
बूढा मेढ कडूंबै री है, बूढा इमरत-झारा है
बूढा मूरत महादेव री, जोगमाया री जोती है
बूढा वीणा मां सारद री, बूढा उजळा मोती है
बूढां री आसीस फळै है, अेक-अेक रा लाख हुवै
बूढा थारी-म्हारी सोभा, बूढा घर री साख हुवै

शक्तिसुत रौ कवि आपरै कवि-कर्म रै बाबत भी पूरो सचेत है। जठै कवि समाज री विषमतावां अर विडरूपां सूं पड़दा उघाड़ै बठै ई 'खुद मर्‌यां बिनां है सुरग कठै, सुण कलम साच बोल्यां सरसी' कैवतां रचनात्मकता अर सकारात्मकता रा बीज बोवण री खेचळ करै। संग्रै री 'कलम अर साच' सिरैनांव कविता में कवि वरतमान री राजनीतिक बदहाली, सामाजिकां री गिरती सोच, साहित्यिक अवमूल्यन, खाखी री खुदगरजी, काळै कोटां री मनमरजी, मिनखाचारै पर हावी होवतै मतलबी व्यवहार अर राजस्व रै रुळपटकार पर खार खावतो कवि वांरी खाल खींचै पण छेहलै आवतां आपरी उल्लेखणजोग आसावादी दीठ सूं पाठक नैं सृजनात्मक संदेस देवै, अेक दाखलो देखो :

है नाव अजे लग सावजोग, बस नाविक री निष्ठा घटगी
लहरां रै लोभ-निमंत्रण में, आंख्यां झट उणरी जा अटकी
पतवार संभाळो निज हाथां, बातां सूं काम सरै कोनी
जातां-पातां नैं भूल्यां बिन, घातां रो दौर रुकै कोनी
समय साच री कथा सुणावण, खुद वीरभद्र बणणो पड़सी
समदर री साख बचावण नैं, सुण कलम साच बोल्यां सरसी

कवि आपरी मायड़भासा राजस्थानी नैं संवैधानिक मानता नीं मिलण सूं घणो दुखी है। अेक शिक्षक अर शिक्षाविद होवण रै नातै वो जाणै कै अेक आदमी सारू उणरी मायड़भासा रो कांई मोल हुवै अर मायड़भासा सूं दूरी रो दुख कितरो गहरो हुवै। औ ईज कारण है कै कवि खुलै आम घोषणा करै कै ''जकी सरकार या विचारधारा उणरी मायड़भासा राजस्थानी नैं मानता देवै, उण सारू वा ही खास है।'' कवि बेबाकी सूं आपरी पीड़ प्रगट करतो कैवै कै आज ताणी री सरकारां राजस्थानी भासा-भासियां री बात नैं सुणी कोनी, जे कोई सुणै तो म्हैं म्हारै अंतस रो दरद बतावां। अर वो दरद औ है कै मुलक री आजादी रै बावजूद वो खुद नैं आजाद नीं मानै क्यूंकै उणरी बोली माथै बंद लागेड़ो है। वो आपरी मायड़भासा में बोल नीं सकै, पढ नीं सकै, लिख नीं सकै। वो आपरी प्राथमिक शिक्षा नैं ई आपरी मायड़भासा में नीं ले सकै तो इणसूं बत्तो दुख कांई हो सकै। कवि शक्तिसुत परंपरागत राजस्थानी काव्यशैली में छप्पय छंद सिरजतां प्रभावी ढंग सूं राजस्थानी री मानता सारू तार्किक वकालत करै :

सुणै नहीं सरकार, सुणै तो दरद सुणावां।
मुलक आजादी मांय, क्यूं न आजाद कहावां।

रहणो राजस्थान, माण-मरजाद न मोड़ां।
हरदम रह हद मांय, सुजस रा आखर जोड़ां।
मदद करयां गुण मानस्यां, अदद अेक अरदास है।
मायड़ भासा मानता, जो देवै सो खास है।।

कवि रो आपरी काव्य भासा माथै इधको अधिकार है। वो कठै ई दाखलां सूं तो कठैई कैबतां अर मुहावरां सूं आपरी भासा रो सिणगार करै। कठै-कठै सीधी-सट्ट अर सपाट बात करै तो कठै ई आख्यान अर संवाद रै माध्यम सूं आपरी बात नैं पुख्ताऊ बणावै। संग्रै री 'कवि अर चंद्रमा रो संवाद' कविता में 'दृष्टि जैड़ी सृष्टि' कैबत नैं चावै ढंग सूं चरितार्थ करतां आज री पीढ़ी नैं सुभग संदेस दियो है कै आपरी जैड़ी निगाह है, दुनियां आपनैं उणी ढंग री निगै आवै। राजस्थानी री पिंगल शैली नैं परोटती इण कविता रो छेकड़लो कवित्त देखो, जिणमें समूचै संवाद रो सार बखाणतां कवि लिखै :

सुनो कविराज मेरे दिल की आवाज,
रखा अेक भी न राज आज मन की बताई है।
दुख और सुख दोऊ बाजे दीठ हू के दास,
दृष्टि जैसी सृष्टि वेद-विबुध ने गाई है।
जाहर जहान हू में मेरो परिवार जाकी,
खूबी और खामी 'गजराज' को गिनाई है।
वसुधा के वासी यातें जान लो जरा सी बात,
जैसी है निगाह वैसी दूनी दरसाई है।।

'अंतस री आवाज' में लय है, छंदोबद्धता है अर राजस्थानी कविता रै भविष्य रो सुभ संदेस है। इणमें प्राचीन गौरव अर आधुनिक चिंतन रो मणिकांचन संजोग देखण नैं मिलै। कवि आं कवितावां में राजस्थानी डिंगल काव्य परंपरा री आलंकारिक छटा अर उणरै नाद सौंदर्य नैं परोटै। तत्सम अर तदभव साथै ठेठ देसज सबदां रो फबतो प्रयोग करै। लोक री कैबतां अर मनमोहक मुहावरां नैं ओपती ठोड़ अंवेरै। खेती-बाड़ी, लोक-व्यवहार अर बिणज-बोपार सूं जुड़ी सूंण-कुसूंण री लोकचावी बातां नैं आपरी कवितावां में काम लेय कवि आपरी लोकसाहित्य विषयक पकड़ रो प्रमाण देवै। अेक जिज्ञासू पाठक सारू आ पोथी अंजस देवण वाळी है। म्हनैं विसवास है कै इण कविता-पोथी नैं राजस्थानी समाज में पूरौ आदर मिलसी।

❖❖

पोथी : अंतस री आवाज / *विधा* : कविता-संग्रै
कवि : डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'
प्रकाशक : राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़
संस्करण : 2020 / *मोल* : 200 रुपिया

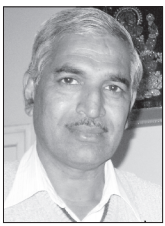

डॉ. मदन सैनी

'पळकती प्रीत' रा पळकां रो मनमोवणो महाकाव्य

प्रीत, प्रेम अर प्यार नैं अरथावणो उणी भांत अकथ है, जिण भांत परमात्मा रै पद नैं अरथावणो। संतजन 'सै सूं ऊंची प्रेम-सगाई' कैयनै प्रेम नैं सगळां सूं सिरै मान्यो है। मीरांबाई तो ढिंढोरो पीटनै कैवै कै प्रेम रै मारग में दुख ई दुख है—''जो मैं ऐसो जाणती रे, प्रीत करयां दुख होय। नगर ढिंढोरो पीटती रे, प्रीत न करियो कोय।''

प्रीत रै मरम नैं प्रकासणो गूंगै रै गुड़ या सुपनै री दांई अकथ ई बतायो गयो है। 'ढोला-मारू रा दूहा' मांय कैयो गयो है :

अकथ कहाणी प्रेम री, किण सूं कही न जाय।
गूंगै रा सपना भया, सुमर-सुमर पछताय।।

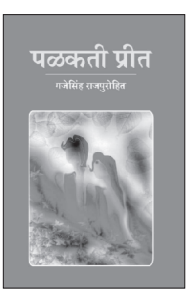

अैड़ी अकथ कहाणी नैं कविता मांय कथणै रा जाझा जतन राजस्थानी रा ऊरमावान कवि डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित आपरी प्रबंध-पोथी 'पळकती प्रीत' में पळकता 'इग्यारै पळकां' मांय अणूतै उमाव सूं करया है। रळियामणी सैली में सिरजी इण पोथी में आपरा 'ढाई आखर' मांय कवि प्रीत रो आदि सूं लेयनै अबार तांई रो सोधपरक विवरो दियो है। पोथी मांय मध्यकाळ रै समाज अर संस्कृति मांय रची-बसी, राजस्थान अर गुजरात सूं जुड़ी इग्यारै प्रेमकथावां प्रीत रा पळका नाखती निगै आवै। आं कवितावां रा सिरैनांव ई जबरा है, जियां—'ऊजळी! ऊजळ प्रीत उजास', 'खींवजी! जबर जनाना बेस', 'केहर! काळजियै री कोर', 'सैणी! सत सपना सिणगारै इत्याद। पोथी रै 'कथा परिशिष्ट' मांय आम पाठकां सारू आं प्रेमकथावां रो सार-संखेप ई दिरीज्यो है।

ठिकाणो :
काळू बास
श्रीडूंगरगढ़ 331803
बीकानेर (राजस्थान)
मो. 7597055150

बुणगट री दीठ सूं विचार करयो जावै तो आं कवितावां मांय प्रबंध-काव्य रा दोनूं रूपां (खंडकाव्य अर महाकाव्य) रो अेकै सागै ई आणंद लियो जाय सकै। खंडकाव्य मांय किणी चरित नायक-नायिका रै जीवण रै किणी अेक पख माथै अर महाकाव्य मांय

 ISSN : 2320-0995

न्यारा-न्यारा पखां माथै सांगोपांग विवरो काव्य रै मानदंड-परवाण उजागर करयो जावै। इण सीगै बात करां तो 'जेठवा-ऊजळी', 'बाघो भारमली', 'सैणी-बीजाणंद', 'आभलदे-खींवजी', 'नागजी-नागवंती', 'जलाल-बूबना', 'सोरठ-बींजो', 'केहर-कंवळ', 'ढोला-मारू', 'नरबद-सुपियार' अर 'मूमल-मेंदरो' आद इग्यारै प्रेमकथावां माथै सिरज्योड़ी अेक-अेक कविता 'प्रीत' रै न्यारै-निरवाळै ढंग-ढाळै नैं नूंवी काव्य-दीठ रै समचै पाठकां रै साम्हीं लावै अर केई-केई उप सिरैनांवां मांय अंवेरयोड़ा प्रीत रा पळकां सूं मनमेळू रो मन मोह लेवै। रचाव री दीठ सूं अै अेक-अेक कविता अेक-अेक खंडकाव्य कैयी जाय सकै। महाकाव्य मांय केई 'सरग' हुया करै, आं कवितावां नैं इग्यारै सरगां रै रूप मांय जोवां तो आपां साम्हीं अेक सांतरै अर सबळै महाकाव्य रो रूप ई थिर हुय जावै, जिणनैं 'पळकती प्रीत' रा पळकां रो महाकाव्य कैय सकां।

आं प्रबंध-कवितावां री खास बात आ है कै सगळी कवितावां आपरै सिरैनांव नैं सारथकता देंवती, उप सिरैनांवां रै पगोथियां माथै आगै बधती आखरी मुकाम माथै आपरै सिरैनांव री ओळ्यां मांय ईज रळ-मिळ जावै अर अै ओळ्यां हुवै दूहा छंद मांय। अेक बानगी 'जलाल-बूबना' री प्रेमकथा माथै सिरजी कविता सूं निजर है। सिरैनांव है—'बूबना! जोड़ी रौ जलाल' अर उप सिरैनांवो है—'खांडौ', जिणरी आखरी ओळ्यां है :

प्रीत रा दुसमी बण्या दलाल। बूबना! जोड़ी रौ जलाल।।

इणी कविता रो बीजो उप सिरैनांवो है—'भंवरो!', जिणरी आखरी ओळ्यां है :

करणौ व्है तो करौ हलाल। बूबना! जोड़ी रौ जलाल।।

कविता रो तीजो उप सिरैनांवो है—'डेरो!' अर इणरी आखरी ओळ्यां है :

रगत सगळां रो रातो लाल। बूबना! जोड़ी रौ जलाल।

इण कविता रो आखरी उप सिरैनांवो है—'तोतक!' अर इणरी आखरी ओळ्यां है :

तोतक प्रीत रौ बलाल। बूबना! जोड़ी रौ जलाल।

कवि री काव्य-सैली मांय बिम्ब, प्रतीक, रूपक अर उपमावां रो ओपतो निभाव हुयो है। बूबना रै रूप नैं बखाणतां कवि कैवै :

इधकौ रूप ई नीं / गुणां रौ ई भंडार / कंकू वरणी / हंसणी / चीतालंकी / गुललंजा / गजगामण / काची कचनार / मिरगानैणी / साचाणी— / पूरी पदमणी।

अैड़ीज रळियामणी काव्य-सैली इण कविता पोथी नैं लीक सूं हटनै नूंवी ऊंचायां देवै। सगळी कवितावां प्रीत रा न्यारा-न्यारा पखां रो सांगोपांग परिग्यान करावै। अैड़ै महताऊ काव्य-सिरजण सारू कवि री कलम नैं मोकळा रंग अर अैड़ै सांतरै सिरजण-प्रकाशन सारू कवि अर प्रकाशक नैं हियै तणी बधाई।

❖❖

पोथी : पळकती प्रीत / *विधा* : कविता
कवि : डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित / *प्रकाशक* : एकता प्रकाशन, चूरू
संस्करण : 2020 / *पाना* : 128 / *मोल* : 300 रुपिया

डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत'

अंतस रै भावां री सरस अभिव्यक्ति : सरद पुन्यूं को चांद

'सरद पुन्यूं को चांद' कवयित्री अभिलाषा पारीक 'अभि' रो सद्य प्रकाशित राजस्थानी काव्यसंग्रै है। उगेरूं गीत अर रचूं कविता सिरैनामां सूं दो खंडां में संपूरण हुयै इण काव्यसंग्रै में 34 गीत अर 38 कवितावां भेळी है। आं गीतां अर कवितावां में कवयित्री आपरी स्त्रीसुलभ कोमल भावनावां अर अनुभूतियां नैं सरल अभिव्यक्ति दी है। चूंकै औ कवयित्री अभिलाषा पारीक रो पैलो काव्यसंग्रै है, इण कारण आं रचनावां में शिल्प-सौष्ठव री दीठ सूं घणै सुधार री दरकार निगै आवै, बठै सिरजणपरक अनुभव री अल्पता भी सीधी-सीधी समझ आवै, उणरै बावजूद आं कवितावां रा वर्ण्य-विषय अर आं में परोटीजेड़ा भाव सुधी पाठकां सारू चाहत रो कारण बणै। इण संग्रै रै गीतां में कठै-कठैई राजस्थानी रा परंपरागत लोकगीतां रो सो लालित्य देखण नैं मिलै बठै ई कवितावां में घणी ठौड़ आज रै जुग रो जथारथ उघड़तो प्रतीत होवै। कवयित्री अेक कामकाजी नारी अर सदगृहिणी है। वै हिंदी अर राजस्थानी दोनूं भासावां में सिरजण करै अर राष्ट्रीय कविमंचां पर कवितावां री प्रस्तुतियां देवै। आकाशवाणी अर दूरदर्शन सूं वांरा सरस गीत प्रसारित हुवै। इण कारण वां कनै घर अर बारै दोनूं छेत्रां रो अनुभव है। घर में अर घर सूं बारै अेक औरत रै साम्हीं आवण वाळी अबखायां अर दोगाचींतियां सूं रूबरू होवण रा मोकळा अवसर वांनै मिल्या है। स्वाभाविक रूप सूं वांरा अै ऊंडा अनुभव वांरै सिरजण रा हिस्सा बण्या है अर औ ई कारण है कै आं गीतां अर कवितावां में अेक नारी री रीझ, खीज, चाहत, अचाहत, भावुकता,

ठिकाणो :
'साकेत' केशव कॉलोनी
स्टेशन रोड़, डीडवाना
जिला-नागौर 341303
मो. 9414587319

 ISSN : 2320-0995

दृढ़ता, कोमलता, पीड़ा अर क्षोभ नैं न्यारा-न्यारा प्रसंगां में सशक्त अभिव्यक्ति मिली है। पति-पत्नी रो प्रेम अर परस्पर पतियारो, पारिवारिक रिश्तां री पवित्रता, सामाजिक रीति-रिवाजां रा गुणावगुण, तीज-तिवांरा री उपादेयता, न्यारा-न्यारा मौसम अर वांरी खूबी-खामियां, मिनखपणै री मठोठ आद संप्रत्ययां माथै आधारित रचनावां में कवयित्री री सकारात्मक दीठ रा सांगोपांग दरसण हुवै। संग्रै में भेळीजी रचनावां में विषयगत विविधता अंजसजोग है। कवयित्री आपरै आसै-पासै अर परिचित परिवेस नैं झीणी निजरां अवलोकन करण रो वाल्हो काम करतां औरां सूं कीं और करण री रचनात्मक खेचळ करी है।

हिंदी समेत समूची भारतीय भासावां रै आधुनिक साहित्य में जकां विमर्शां री आज धूम है, वां मांय स्वानुभूति अर सहानुभूति नैं लेय खासा चरचावां हुवै। इण दीठ सूं 'सरद पुन्यूं को चांद' री बात करां तो आं गीतां अर कवितावां में कवयित्री री स्वानुभूति मुखरित हुई है। आं गीतां री नायिका कणांई आपरै पैलै प्यार री याद में खोयोड़ी मीठा सपना देखै तो कणांई मचोळा मारती मतवाळी मुग्धा बण इतरावै। कणांई परदेसां बसतै पिया री विरह पीड़ में कळझळती वा कोयल सूं आपरै साजन रा समाचार सुणावण री अरदास करै तो कणांई नैणां सूं नैणां रा आखर बांचतां आपै राज रो राज जाणण सारू उंतावळी हुवै। कणांई मगेजण झीणै घूघटै मांय सूं आपरै रळियावणै रूप री छटा बिखेरती बांकड़ली मूंछां री मरोड़ नैं बिना मोल बिकण सारू मजबूर करै। कणांई नेही-निजरां सूं मीठा मिजमानां री मनवार करै तो कणांई आपरै मन रै आंगणियै में आपरै प्राण प्यारै रो भावभीनो स्वागत करै। कणांई तो वा आपरी अदावां पर दुनियां नैं नचावै तो कणांई नेही नायक री कामणगारी निजरां नैं देख खुद री सुध-बुध बिसर जावै। अेक विरहिणी नायिका सरद पुन्यूं रै चांद नैं आपरी मांयली पीड़ बतावतां अरज करै कै हे चांद! थनैं देख'र म्हारै हिवड़ै में हूक-सी उठै। मन में प्यारै पीव सूं मिलण री उत्कंठा जागै पण पीव तो परदेस में है। उण पीय-बिछोळी प्रीतपगी धण री सरद पुन्यूं रै चांद सूं बंतळ देखो :

हिवड़ै मांहीं उठै हूक सी, पिया बसै परदेस
काची काया बणी ठणी, नित देवै यो संदेस
तरसै थारी मरवण ढोला, कद आवोला देस
काजळ टीकी झाला देवै, घूमर घालै देह

नारी सशक्तीकरण रै इण दौर में कवयित्री अभिलाषा पारीक भी आपरी चरित्रनायिका नैं अबळा सूं सबळा बणण रो आह्वान करती परमुखपेक्षिता नैं छोड आत्मनिर्भर बणण री हुंकार भरै :

म्हैं अेकली पंथ निहारू / म्हैं अेकली पंथ बुहारूं
पंथां री पगडंडियां माळै / बिना डोकरां, बिना छोकरां
बिना डरयां अर बिना रुक्यां / म्हैं चालूं इब अेकली
म्हैं न पूछूं / म्हैं कुण संग चालूं?

नारी अेक साथै माँ, दादी, नानी, जोड़ायत, बहन, बेटी, भूआ अर भतीजी जैड़ा केई सारा रिश्तां नैं बखूबी निभावै। कवयित्री अभिलाषा पारीक 'अभि' इण बात नैं भलीभांत जाणै कै किण भांत आपणै समाज में बेटियां री आजादी पर पहरा लगायोड़ा रैवै। किण भांत वांरी थोड़ी-सी उन्मुक्तता परिवार सारू चिंता रो कारण बणै। कवयित्री जाणै कै बेटियां पर लागण वाळी अै रूढ़ीगत पाबंदियां वांरी अंतरनिहित खिमतावां रै अधिकतम विकास में मोटी बाधावां बणै इण कारण वा आपरै 'चिड़कली' सिरैनामक गीत में सामाजिकां सूं आग्रह करै :

ईं चिड़कली नैं झपटो मत, उड़बा दो दूर तक भाई
थांका बाग-बगीचां अर खेतां की जान छै साचांई

इण संग्रै री केई रचनावां प्रतीकात्मक है तो केई सीधी-सट्ट। कीं रचनावां चेतावणीपरक है तो कीं आत्ममंथनपरक। आखै संसार में सबसूं मोटै जनतांत्रिक देस भारत री अेक जिम्मेदार अर जागरुक नागरिक होवण रै नातै कवयित्री 'वोट' री ताकत अर उणरै सदुपयोग रै फायदां सूं घणैमान परिचित है। इण कारण वा हिंदुस्तान रै मतदातावां सूं घणी विनम्रता साथै आग्रह करै कै आप चावै उणनैं वोट देवो पण वोट देवणो जरूरी है। कवयित्री वोट नैं जनतंत्र रो सबसूं मोटो तिंवार बतावै :

ईं की ऊं की जीं की भी, बणै चाहै सरकार
पैली सगळा वोट करो थे, यो थांको अधिकार
पाछै चावै जीं की भी, बण जावै या सरकार
आयो आयो प्रजातंत्र को सबसूं बडो तिंवार

सार रूप में बात करां तो इण संग्रै री रचनावां नारी मन री कंवळी भावनावां नैं सीधी सरल भासा में अभिव्यक्त करै। कवयित्री अभिलाषा पारीक 'अभि' नैं इण संग्रै सारू घणैमान बधाई। पोथी में आई वर्तनी अर विभक्तियां सूं जुड़ी त्रुटियां सुधी पाठक नैं खटकै, इण वास्तै आगै सूं सुधार करण री आस राखूं।

❖❖

पोथी : सरद पुन्यूं को चांद / *विधा :* कविता-गीत
कवयित्री : अभिलाषा पारीक 'अभि'
प्रकाशक : कलासन प्रकाशन, बीकानेर
संस्करण : 2019
पाना : 88 / *मोल :* 150 रुपिया

 ISSN : 2320-0995